पेंगुइन की कहानी

दिनेश पालीवाल

पेंगुइन की कहानी

लोगों का विचार है कि पेंगुइनें विरल और दुर्लभ चिड़ियाएं हैं। यानी इनकी संख्या इतनी कम है कि ये लोगों को दिखाई नहीं देती। लेकिन यह लोगों का गलत ख्याल है। पेंगुइन दुर्लभ चिड़िया नहीं हैं। न इनकी संख्या संसार में कम है। ये लाखों-करोड़ों की संख्या में एक ही जगह बैठी नजर आती हैं। परन्तु ये ऐसे स्थानों पर जरूर रहना पसंद करती हैं, जहां आदमी या इनके दूसरे दुश्मन इनके नजदीक न पहुंच सकें। ऐसे स्थान कौन से होंगे? ऐसे स्थान वे होंगे, जहां आदमी आसानी से रह नहीं सकता होगा या जहां आदमी के लिए कोई लाभदायक चीज न होगी। इसीलिए पेंगुइनों की ज्यादातर जातियां दक्षिणी ध्रुव के उन बर्फीले स्थानों पर रहती हैं, जहां आदमी बहुत हिम्मत करके भी आसानी से नहीं पहुंच पाता और जहां साल भर बर्फ पड़ती रहती हैं। भयंकर जाड़े से चारों तरफ की चीजें ऐंठी हुई पाई जाती हैं। वहीं ये चिड़ियाएं हमेशा रहना पसंद करती हैं। लेकिन कुछ पेंगुइन ऐसी भी हैं, जो ऐसे स्थानों पर रहती हैं, जहां आदमी भी रहता है। पेंगुइन काफी समझदार चिड़ियाएं हैं और आदमी की बस्तियों के पास रहने के बावजूद वे काफी सुरक्षित रहती हैं। क्योंकि दिन में वे समुद्रों में रहती हैं और काफी रात गए ये समुद्र के किनारे पाए जाने वाले स्थानों पर आ जाती हैं। रात में आदमी सो जाता है और इन्हें आदमी का उतना खतरा नहीं रह जाता। वैसे ही जैसे दिन भर उड़ती रहने वाली गौरैयाओं को रात के समय आदमी के कमरों में ही सोने में जरा भी डर नहीं लगता।

पेंगुइन की कहानी

दिनेश पालीवाल

अक्षरम्
दिल्ली

विषय-क्रम

पेंगुइन क्या है?	5
लोगों का ख्याल और पेंगुइनें	5
पेंगुइन कैसी चिड़ियाएं हैं	6
दुनिया में कुल कितनी चिड़ियाएं हैं?	8
चिड़ियों की विशेषताएं	9
पेंग्विइनें कहां कहां पाई जाती हैं	26
पेंग्विइनों की जातियां और उनके आकार व वज़न	29
पेंगुइन के अंडे और आदमी	33
पेंगुइन के अंडों का रंग और ऊपरी सतह	34
पेंगुइन और आदमी	34
पेंगुइन कैसे पकड़ी हैं	36
कुशल तैराक और डुबकैलिया पेंगुइन	37
पंडित पेंगुइन	40
तैरने के उपयुक्त इनके पर	41
पानी से बाहर जाने पर पेंगुइन कैसी दिखती है	41
पानी में कूदते समय बुलबुले	42
सबेरा समुद्र और पेंगुइन	42
खानातलाशी समुद्र की पेंगुइन जासूस द्वारा	43
समुद्र में पेंगुइन की उछल-कूद	44
समुद्र में शिकार का तरीका और भोजन	45
समुद्र में पेंगुइन के दुश्मन	46
पेंगुइन के दुश्मन समुद्र	50
धरती पर पेंगुइन के दुश्मन	50

पेंगुइन के दुश्मन मौसम 51
पेंगुइन की बर्फ़ पर स्केटिंग और खेल 52
पेंगुइन अपने कपड़े बदलती हैं 54
पेंगुइन की अंडे देने की तैयारी 55
जोड़े की तलाश 56
जोड़ा बांधने में कठिनाई 57
अंडे देने का स्थान 59
पेंगुइन का अपने पड़ोसियों से व्यवहार 59
पेंगुइन के चूज़े 60
चूज़ों का भोजन 62
चूज़ों की ट्रेनिंग 62
मनुष्य और पेंगुइन की आदतें 63

पेंगुइन क्या है ?

पेंगुइन एक प्रकार की चिड़ियाएँ हैं। संसार में ऐसा कौन होगा, जिसने कभी कोई चिड़िया न देखी हो। हम सबने चिड़ियाएँ देखी हैं अपने घरों में। घर से बाहर, अपने शहर में, अपने गांव में, अपनी फुलवारी में, अपने बगीचों में या अपने देश के बड़े-बड़े शहरों के चिड़ियाघरों में। चिड़ियाएँ हमें हर जगह देखने को मिलती हैं। इनमें ऐसी बहुत-सी चिड़ियाएँ हैं, जिनके बारे में हम जानते हैं। जिन्हें हम रोज कहीं-न-कहीं देखते हैं। लेकिन ऐसी चिड़ियों की भी कमी नहीं है, जो हमें हर समय नहीं दिखाई देतीं। साल के कुछ ही महीनों में हमें वे नजर आती हैं, फिर नजर नहीं आतीं। लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हर चिड़िया, संसार के हर देश में पाई जाए। हर देश में जैसे हाथी और शेर नहीं पाया जाता, वैसे ही हर देश में हर चिड़िया नहीं पाई जाती। पेंगुइन चिड़िया जरूर है, लेकिन पेंगुइन ऐसी चिड़िया है जो हर देश में नहीं पाई जाती है। यह संसार में सिर्फ दक्षिणी ध्रुव और उसके आस-पास वाले स्थानों पर पाई जाती है।

लोगों का ख्याल और पेंगुइनें

लोगों का ख्याल है कि पेंगुइनें विरल और दुर्लभ चिड़ियाएँ हैं। यानी इनकी संख्या इतनी कम है कि ये आदमी को दिखाई नहीं देतीं। लेकिन यह लोगों का गलत ख्याल है। पेंगुइन दुर्लभ चिड़िया नहीं है। न इनकी संख्या संसार में कम है। ये लाखों-करोड़ों की संख्या

में एक ही जगह बैठी हुई नजर आती हैं। परन्तु ये ऐसे स्थानों पर जरूर रहना पसंद करती हैं, जहाँ आदमी या इनके दूसरे दुश्मन इनके नजदीक न पहुँच सकें। ऐसे स्थान कौन से होंगे ? ऐसे स्थान वे होंगे, जहाँ आदमी आसानी से रह नहीं सकता होगा या जहाँ आदमी के लिए कोई लाभदायक चीज न होगी। इसीलिए पेंगुइनों की ज्यादातर जातियाँ दक्षिणी ध्रुव के उन बर्फीले स्थानों पर रहती हैं, जहाँ आदमी बहुत हिम्मत करके भी आसानी से नहीं पहुँच पाता। और जहाँ साल भर बर्फ पड़ती रहती है। भंयकर जाड़े से चारों तरफ की चीजें ऐंठी हुई पाई जाती हैं। वहीं ये चिड़ियाएँ हमेशा रहना पसंद करती हैं। लेकिन कुछ पेंगुइन ऐसी भी हैं, जो ऐसे स्थानों पर रहती हैं, जहाँ आदमी भी रहता है। लेकिन पेंगुइन काफी समझदार चिड़ियाएँ हैं और आदमी की बस्तियों के पास रहने के बावजूद वे काफी सुरक्षित रहती हैं। क्योंकि दिन में वे समुद्रों में रहती हैं। और काफी रात गए ये समुद्र के किनारे पाए जाने वाले स्थानों पर आ जाती हैं। रात में आदमी सो जाता है। और इन्हें आदमी का उतना खतरा नहीं रह जाता। वैसे ही जैसे दिन भर उड़ती रहने वाली गौरैयाओं को रात के समय आदमी के कमरों में ही सोने में जरा भी डर नहीं लगता।

पेंगुइन कैसी चिड़ियाएँ हैं

पेंगुइन आदमी से दूर रहने वाली चिड़ियाएँ हैं। पेंगुइन दक्षिण ध्रुव और उसके आस-पास रहने वाली चिड़ियाएँ हैं। पेंगुइन आकाश में कभी भी न उड़ सकने वाली चिड़ियाएँ हैं, जो हमेशा या तो समुद्रों में खूब मजे से तैरती हुई देखी जा सकती हैं या जिन्हें समुद्रों के किनारे रात के समय उन स्थानों पर देखा जा सकता है, जहाँ आदमियों की बस्तियाँ हैं या जहाँ आदमी नहीं रहता, वहाँ बर्फ से ढके मैदानों में इन्हें दिन के समय भी मजे से बैठा हुआ देखा जा सकता है। यानी पेंगुइन न उड़ सकने वाली ऐसी चिड़ियाएँ हैं, जो या तो समुद्रों
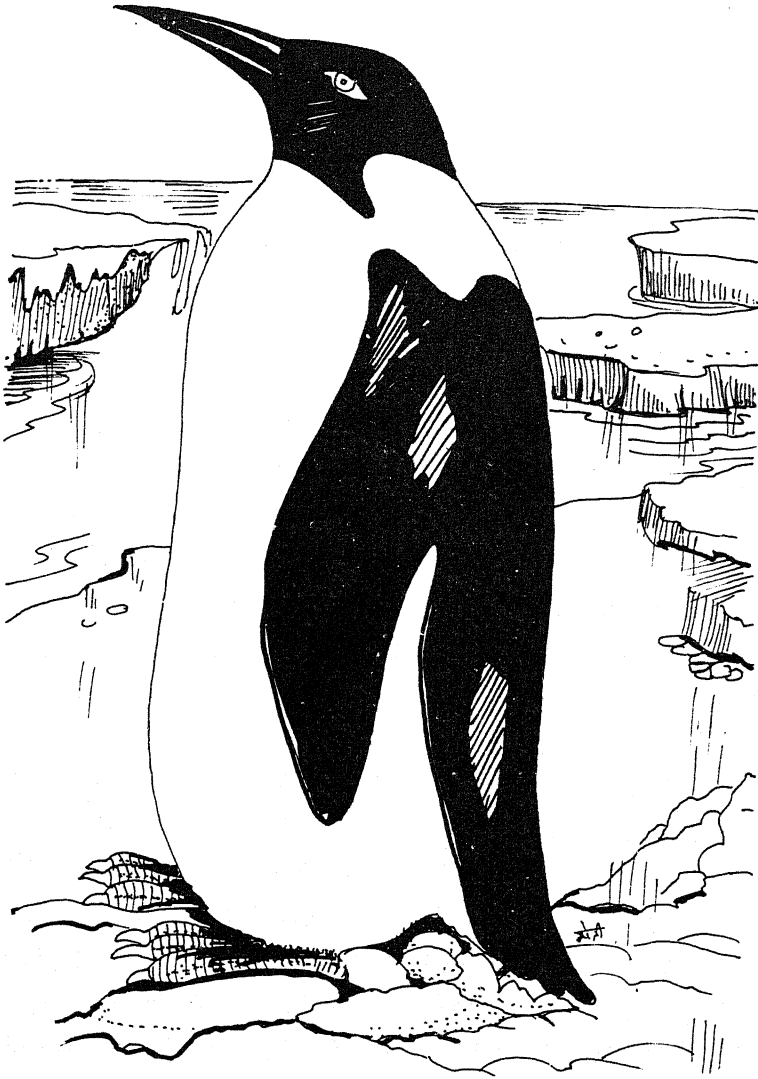
पेंगुइन

में तैरती रहती हैं या किनारे पर रात या दिन में आकर बैठ जाती हैं।

दुनिया में कुल कितनी चिड़ियाएँ हैं ?

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा—'बीरबल दिल्ली में कुल कितने कौए हैं ?' बड़ा टेढ़ा सवाल था। लेकिन बीरबल ठहरे महा-हाजिरजवाबी। तुरन्त कुछ सोच कर बोले—'जी दिल्ली में कुल दो लाख कौए हैं। अगर दो लाख से ऊपर निकल आएँ तो समझ लीजिए कि कुछ कौए बाहर से दिल्ली देखने आए हुए हैं और दिल्ली देख कर वापस चले जाएँगे। अगर कम निकलें तो समझ लीजिए कि कुछ कौए दिल्ली से बाहर दूसरे शहरों में घूमने गए हुए हैं!' अकबर हैरान रह गए।

लेकिन वैज्ञानिक इस तरह बिना कुछ सोचे-समझे जवाब नहीं देते। वे जो कहते हैं, एकदम सही कहते हैं। संख्याओं का लगभग अनुमान लगा कर कहते हैं। बीरबल ने बिना गिने ही कौओं की संख्या बता दी थी। क्योंकि बीरबल जानते थे, अकबर के दरबार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है और न ही ऐसा कोई साधन है कि दिल्ली के सारे कौए गिने जा सकें। इसलिए बिना किसी हिचक के बीरबल ने एक ऐसी संख्या बता दी, जिसे न झूठ सिद्ध किया जा सकता था, न सही सिद्ध।

वैज्ञानिकों ने सांख्यकी के आधार पर संसार में पाई जाने वाली कुल चिड़ियों का औसत निकाला है। वैज्ञानिकों का मत है कि दुनिया में कुल 8600 जातियों की चिड़ियाएँ पाई जाती हैं। यानी जैसे मोर एक जाति की चिड़िया है तो कौआ दूसरी जाति का पक्षी है। इस तरह अगर गिना जाए तो संसार में कुल 8600 प्रकार की चिड़ियाएँ ही पाई जाती हैं। वैसे यह संख्या कम नहीं है। क्योंकि जितने रीढ़ध ारी जानवर इस धरती पर पाए जाते हैं, उनमें मछलियों को छोड़कर कोई ऐसे जीव नहीं हैं, जिनकी चिड़ियों के मुकाबले में ज्यादा जातियाँ

पाई जाती हों।

संसार में स्तनधारी जीव कुल 3000 जातियों के पाए जाते हैं मछलियाँ 9000 प्रकार की। जबकि सरीसृप, यानी कछुए, छिपकलियों और सापों जैसे जीवों की कुछ जातियाँ 3500 हैं। और मेढ़क जैसे उभयचरों की कुल जातियां 1000 हैं। इस तरह देखा जाए तो मछलियों के बाद संसार में सबसे ज्यादा जातियाँ या प्रकार चिड़ियों के हैं।

आदमी की आबादी इस धरती पर मालूम है कितनी है ? अपने देश भारत की आबादी इस साल सन् 1971 की जनगणना के अनुसार लगभ 55 करोड़ है। इस तरह संसार के हर देश की आबादी के आंकड़े एकत्र किए जाएँ तो इस धरती पर आदमियों की कुल संख्या 3 अरब 50 करोड़ के लगभग है। यानी कुल 350,0000000। इसी तरह गिना जाए तो कुल चिड़ियाएँ धरती पर कितनी होंगी ? लगभग एक खरब हैं यानी 100,000,000,000।

चिड़ियों की विशेषताएँ

पेंगुइन चिड़ियाएँ हैं और चिड़ियाओं में दूसरे जीवों को देखते हुए कुछ खास गुण होते हैं। खास विशेषताएँ होती हैं, जो दूसरे जीवों में नहीं पाई जातीं। सिर्फ चिड़ियों में ही पाई जाती हैं। जैसे—

1. चिड़ियों का शरीर परों से ढंका रहता है और उनके परों का रंग बहुत सुन्दर होने के कारण चिड़ियाएँ अक्सर देखने में बहुत खूबसूरत लगा करती हैं। पेंगुइन का शरीर भी परों से ढंका रहता है और इनके परों का रंग भी बेहद सुन्दर और आकर्षक होता है। कहीं एकदम बर्फ की तरह सफेद, कहीं एकदम काला, कहीं नीला, कहीं नारंगी, कहीं पीला, कहीं लाल, कहीं बैंगनी। असल में इनके पर रंग-बिरंगे इसलिए होते हैं कि ये उन खूबसूरत रंगों द्वारा अपने नर और मादाओं को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

2. चिड़ियाएँ कहीं भी क्यों न रहें हमेशा सांस हवा में ही लेती

हैं यानी चाहे वे समुद्र में रहें, चाहे जमीन पर, चाहे घोंसलों में, चाहे आकाश में। वे हमेशा सांस लेती रहती हैं, वैसे ही जैसे हम लेते रहते हैं। पेंगुइन उड़ नहीं सकतीं। लेकिन समुद्र में तैरते समय भी ये सांस पानी से अपना सिर ऊपर निकाल कर लिया करती हैं। और जमीन पर, अपने घोंसलों में बैठे होने पर भी ये सांस लेती रहती हैं, यानी हवा अपने फेफड़ों में भरती और निकालती रहती हैं।

3. चिड़ियाएँ भी स्तनधारी जीवों की ही तरह गर्म खून वाली होती हैं। यानी जिस तरह आदमी गर्म खून का जन्तु है और किसी भी मौसम में अपने शरीर का तापमान एक जैसा रखता है जो साढ़े अठ्ठानवे डिग्री फेरनहाइट होता है। चाहे जाड़ा हो, चाहे गर्मी। आदमी के शरीर का अगर टैम्परेचर लिया जाए तो हमेशा एक जैसा ही मिलेगा। उसी तरह चिड़ियों का भी टेम्प्रेचर हर मौसम में एक जैसा मिलेगा। पेंगुइनों के शरीर का तापमान भी हमेशा एक जैसा रहता है। चाहे मौसम बरसात का हो चाहे गर्मी का और चाहे भयंकर सर्दी पड़ रही हो। यही नहीं। पेंगुइन चाहे समुद्र के पानी में घंटों तैरती रहें, चाहे बर्फ से ढंकी जमीन पर बैठी रहें, उनके शरीर का तापमान कभी नहीं बदलता।

4. सारी चिड़ियाएँ अण्डे देती हैं। पेंगुइन भी अण्डे देती हैं। इनके अण्डे बहुत बड़े और भारी होते हैं। अण्डे देने के लिए लगभग सारी चिड़ियाएँ घोंसले बनाती हैं, पेंगुइन भी समुद्रों के किनारे, लेकिन काफी हट कर, कंकड़-पत्थरों व विभिन्न घासों की सहायता से अपने घोंसले जमीन पर ही बनाती हैं। क्योंकि ये पेड़ों पर घोंसले बनाने के लिए ऊपर उड़ नहीं पातीं। बया के घोंसले किसने नहीं देखे कितने सुन्दर होते हैं। और उन घोंसलों की बनावट कितनी महीन और सफाईदार होती है कि आदमी बहुत कोशिश करने पर भी वैसे खूबसूरत घोंसले नहीं बुन कर तैयार कर सकता। लेकिन पेंगुइन के घोंसले ऐसे खूबसूरत नहीं होते। ये जिस जगह अण्डे देती हैं, उसके आस-पास कुछ फुट जमीन पर ये कंकड़ आदि रख-रख कर एक गोल

घेरा बना लेती है। यह गोल घेरा कभी-कभी तीन-तीन फुट तक ऊँचा होता है और पेंगुइन अण्डे देने के लिए इस गोल घेरे में जा कर दुबक जाता है। घोंसले सभी पक्षी अपने अंडों व बच्चों की रखवाली के लिए बनाया करते हैं, जिससे उनके अंडे लुढ़क न जाएँ। कोई दुश्मन आकर चट उन्हें फोड़ या खा न जाए। अथवा दूसरी उन्हीं जैसी पेंगुइन उनके अंडे पैरों से कुचल न दे। या उनके बच्चों को बहका कर ले न जाएँ। इसीलिए पेंगुइन भी घोंसले बनाती हैं।

5. हमारी तरह चिड़ियों के भी दो हाथ और दो पांव होते हैं। लेकिन चिड़ियों के हाथ हमारे हाथों जैसे नहीं होते। क्योंकि वे हमारी तरह हाथों से खाना नहीं खातीं। काम नहीं करतीं। जब कोई हमें मारता है तो हमारे हाथ ही हमारी रक्षा के लिए सबसे पहले ऊपर उठ जाते हैं। यानी हम अपने हाथों की सहायता से अपनी रक्षा भी करते हैं। लेकिन चिड़ियाएँ अपने हाथों से सिर्फ दो प्रकार के ही काम लेती हैं। ज्यादातर चिड़ियों के हाथ पंखों या डैनों में बदल जाते हैं। जिनसे वे उड़ने का काम लेती हैं। हर चिड़िया के पास हमें पंख या डैने दिखाई देते हैं। दरसअल ये चिड़ियों के हाथ हैं। बिल्कुल हमारे जैसे ही हाथ। लेकिन उनके हाथों की रचना हमारे हाथों की रचना से इसलिए भिन्न है कि वे हाथों से उड़ती हैं और हम तरह-तरह के काम अपने हाथों से लेते हैं। लेकिन पेंगुइन के हाथ तो चिड़ियों की तरह उड़ने के भी काम में नहीं आते। क्योंकि हम सभी जान गए हैं कि पेंगुइन उड़ने वाली चिड़िया नहीं है। बल्कि समुद्रों में खूब तेजी से तैरने वाली चिड़िया है। इसलिए पेंगुइन के हाथ तैराकी के लिए जरूरी आकार के होते हैं। तैरने के लिए कैसे हाथ चाहिए? तैरने वाले हाथों के लिए बीच में मुड़ना आवश्यक नहीं होता। इसलिए पेंगुइन के हाथ बिल्कुल सीधे रहते हैं। चिड़ियों की तरह मुड़ कर तह नहीं हो जाते। वे हर समय एक जैसा ही फैलाव रखते हैं।

6. चिड़ियों के पंखों या डैनों में जो पर लगे होते हैं, वे दो प्रकार

के होते हैं। एक तो वह, जो आकार में छोटे होते हैं और पंख को चारों ओर से ढंके रहते हैं। दूसरे वे, जो उड़ते समय जापानी पंखे की तरह फैल जाते हैं और आकार में काफी बड़े होते हैं। इन्हें उड़ने वाले बड़े पर कहा जाता है। जब पक्षी हवा में उड़ता होता है, तब यही बड़े-बड़े पर हवा को नीचे दबा कर पक्षी को ऊपर नीले आकाश में उड़ाए रखता है। चूंकि पेंगुइन को उड़ने की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए इसके पंखों पर एक ही प्रकार के पर पाए जाते हैं। यानी छोटे-छोटे पर, जो इनके डैनों को चारों ओर से ढंके रहते हैं। इन्हें बड़े परों की जरूरत नहीं रहती जिनसे ये उड़ते समय हवा को नीचे दबाने का काम लें। दूसरी चिड़ियों को बैठते समय अपने पंख समेट कर बैठना पड़ता है। पेंगुइन के पंख बैठने में पक्षी को तंग नहीं करते। इसलिए हमारे हाथों की तरह पेंगुइन के पंख भी उनकी बगलों में लटके रहते हैं जमीन पर बैठे रहने के समय। लेकिन जब ये समुद्रों में उतर जाती हैं, तो इन्हीं लटके हुए डैनों से ये तैरने का काम ठीक उसी प्रकार लेती हैं, जैसे हम लोग अपने हाथों की सहायता से नदियों में तैरने का काम लेते हैं। तैरते समय हमें क्या करना पड़ता है? अपने हाथों को अपने सिर के आगे ले जा कर तेजी से पीछे खींचना पड़ता है। जिससे पानी के तल पर लेटा हुआ हमारा शरीर बिना डूबे आगे को बढ़ता है। ठीक उसी तरह पेंगुइन को भी अपने पंखों से पानी को नीचे और पीछे ठेलना पड़ता है, जिससे वे आगे की ओर तैरती हुई बढ़ सकें। यानी चिड़ियाएं अगर हवा में अपने पंखों की सहायता से उड़ती हैं, तो पेंगुइन पानी में अपने पंखों की सहायता से उड़ने की तरह ही तैरती है। इनकी रफ्तार पानी में तैरते समय कम नहीं होती। ये बड़ी तेजी से तैर सकती है। उतनी ही तेजी से, जितनी तेजी से सामान्यतः कोई चिड़िया हवा में उड़ सकती है। हम तैराकी प्रतियोगिताओं में कितने भी मेडल और कप क्यों न जीत चुके हों, लेकिन हम पेंगुइन से तैरने की प्रतियोगिता में हमेशा हार जाएँगे। मिहिरसेन को कौन नहीं जानता। समुद्रों में कई बार तैरने

के रिकार्ड कायम कर चुके हैं। लेकिन उनके लिए भी इन पक्षियों का मुकाबला कर सकना आसान नहीं है। क्योंकि तैरना हमारी स्वाभाविक वृत्ति नहीं है। जबकि पेंगुइन की, तैरना एकदम स्वाभाविक वृत्ति है।

7. हम अपने दो पैरों से चलने का काम लेते हैं। हमारे आस-पास जितनी चिड़ियाएँ हमें दिखाई देती हैं वे सब भी अपने दो पैरों से जमीन पर बैठने, चलने, फुदकने या पेड़ों की डालियों को पकड़ कर बैठने, शिकार करने या अपने भोजन को थामे रहने का काम लेती हैं। पेंगुइन अपने पैरों से सिर्फ दो ही काम लेती है। एक तो चलने का, दूसरे पानी में तैरने का। हम सबने बतखों को पानी में तैरते हुए देखा है। बतख अपने डैनों से तैरने का काम नहीं लेती बल्कि अपने पैरों की सहायता से तैरती है। बतख के पैरों में मेढ़क के पिछले पैरों जैसी खाल की एक झिल्ली-सी चढ़ी रहती है। जिससे इनके पैरों की उंगलियाँ अलग-अलग नहीं रह पातीं। बल्कि छातों की कमानियों की तरह एक ही कपड़े जैसी झिल्ली में बंधी रहने के कारण ये पतवार की तरह का पंजा बना देती हैं। बतख को तैरने में यही पतवारें मदद करती हैं। पेंगुइन के पैरों में भी वैसी ही झिल्लियाँ उंगलियों को बांधे रहती हैं। ये अपने डैनों से भी तैरने का काम लेती हैं और पैरों से भी। यही कारण है कि पेंगुइन पानी में बहुत तेज तैरती है। बतखें उसका मुकाबला नहीं कर सकतीं।

8. पेंगुइन के ये पैर बहुत छोटे होते हैं। दूसरी चिड़ियों की तरह बड़े नहीं होते और शरीर के एकदम पिछले हिस्से से जुड़े होते हैं। जबकि दूसरी चिड़ियों के पैर उनके शरीरों के करीब-करीब बीच जुड़े होते हैं। और जब चिड़ियाएँ जमीन पर बैठती हैं, तो उनका आधा शरीर पैर के आगे व आधा पैरों के पीछे, जमीन के समानान्तर बना रहता है। जबकि पेंगुइन का शरीर पैरों के आगे-पीछे आधा-आधा न होकर और न जमीन के समानान्तर होकर, सीधा हमारी तरह दो पैरों पर आकाश की तरफ सिर किये खड़ा रहता है। यानी

पेंगुइन जब जमीन पर बैठी होती है, तो दूर से लगता है, कोई कंबल ओढ़े आदमी खड़ा है। इस तरह इनका बैठा होना दूसरे जानवरों के लिए काफी डरावना होता है।

9. चिड़ियों की पूंछें देखी होंगी। असली पूंछ बहुत छोटी होती है। लेकिन उस पूंछ के पर काफी बड़े होते हैं। उड़ते समय इन चिड़ियों के पूंछों के ये बड़े पर जापानी पंखे की तरह फैल जाते हैं, जिससे इन चिड़ियों को आकाश में उड़ते समय दिशा को बदलने में सहायता मिलती है। हवाई जहाज देखे होंगे। हवाई जहाजों में भी पिछले सिरे पर इसी तरह की एक पट्टी-सी लगी होती है। हवाई जहाजों की उड़ने की दिशा भी उसी पट्टी की सहायता से बदली जाती है। उसी तरह चिड़ियाएँ भी उड़ने की दिशा में उसी पूंछ से सहायता लेती हैं, और आकाश में अपना संतुलन कायम रखती हैं। लेकिन पेंगुइन उड़ती नहीं। पानी में तैरती है। इसलिए पेंगुइन को वैसी पूंछ की जरूरत नहीं पड़ती, जैसी दूसरे पक्षियों को पड़ती है। परन्तु पेंगुइन अपनी कठोर और मजबूत परों वाली पूंछ से एक बड़ा मजेदार काम लेती हैं। कभी चिड़ियाघर में सैर करने जाओ तो कंगारूओं को गौर से देखना। कंगारू की पूंछ भी बहुत मोटी और मजबूत होती है। क्योंकि कंगारू जब अपने पिछले दो पैरों की सहायता से आदमी की तरह बैठता है, तो पूंछ को कुर्सी बना लेता है। बैठते समय पूंछ के सहारे मजे में बैठ जाता है। कितना अच्छा होता, अगर ऐसा ही साधन हमारे पास होता। जहाँ कहीं थक जाते, मजे से अपने साथ रहने वाली कुर्सी पर बैठ जाते। रेलगाड़ी में जगह न मिलती। सीट पर बैठने को न मिलता तो अपनी सदैव साथ रहने वाली कुर्सी पर मजे से बैठ जाते। न किसी से झगड़ने की जरूरत पड़ती, न लड़ने की। पेंगुइन की पूंछ भी इसी तरह की पूंछ होती है। वह जब पैरों के सहारे बैठती है, तो पूंछ उसके लिए कुर्सी का काम देती है और बिना थके पेंगुइन महीने दो महीने वैसी ही बैठी रहती है।

10. पेंगुइन का शरीर भी अन्य पक्षियों की तरह चार हिस्सों

में बांटा जा सकता है—

(क) *सिर* : सबसे पहला भाग होता है गोल। शरीर की तुलना में छोटा, गोलाकार और चोंच व कानों, आँखों व मुंहसहित। चोंचें वैसी ही होती हैं, जैसी ज्यादातर चिड़ियों की होती हैं। लेकिन कौओं की चोंच हमेशा एक जैसी होगी। जबकि पेंगुइन की अलग-अलग जातियों में अलग-अलग तरह की चोंचें होती हैं। किसी की चोंच बहुत मोटी होती है, किसी की बहुत पतली। किसी की चोंच एकदम सीधी होती है, तो किसी की चोंच आगे को थोड़ी झुकी हुई। जैसी चील या बाज पक्षी की होती है। किसी-किसी पेंगुइन की चोंच पर मांस की पटिट्यां भी चढ़ी रहती हैं। और उनका रंग भी काला न होकर रंग-बिरंगा होता है, जिससे वे देखने में बड़ी सुन्दर लगा करती हैं। चोंच के बीच में इनका मुंह होता है। मुंह में मांसल जीभ होती है। कंठ होता है। चोंच के ऊपर दो छोटे-छोटे सिर से सटे हुए छेद होते हैं, जिनमें होकर हवा भीतर फेफड़ों तक जाती है और इनकी सहायता से ये सांस लेती हैं, वैसे ही जैसे हम अपनी नाक से सांस लेते हैं। इनके मुंह में हमारी तरह दांत नहीं होते इसलिए इनकी चोंचों की धार बड़ी तीखी होती है। अपने शिकार को उन्हीं धारों से खचाखच काट डालती हैं। चोंचों की सहायता से पेंगुइन को वैज्ञानिक आसानी से पहचान लेते हैं। पेंगुइन की क्या जाति है, किस वर्ग की है, इसे जानने में उनकी चोंचों से बड़ी सहायता मिलती है। जैसे महाराजा और राजा पेंगुइन की चोंच दूर से ही देख कर पहचानी जा सकती है। महाराजा पेंगुइन की चोंच काफी पतली, नुकीली और आगे की नोक नीचे को झुकी हुई होती है। जबकि राजा साहब की चोंच नुकीली, पतली और लंबी तो उतनी ही होती है, जितनी महाराजा की, लेकिन राजा की चोंच की नोक नीचे को झुकी हुई नहीं होती। दूसरे राजा की चोंच के नीचे जो मांस की पट्टी होती है, उसका आकार काफी बड़ा होता है और रंग गहरा पीला! जबकि महाराजा की चोंच के नीचे की मांसल पट्टी उतनी चौड़ी नहीं होती। सिर

ज्यादातर पेंगुइन के काले ही होते हैं। लेकिन कुछ पेंगुइन के सिरों पर अगल-बगल में बड़ी खूबसूरत कलंगियां लगी होती हैं। मानो वे पेंगुइन अपनी शादी में दूल्हा बन कर कहीं जा रही हों। बिल्कुल दूल्हों जैसी झालर और कलंगीदार मुकुट-से उनके सिरों पर रखे होते हैं। इन झालरों या मुकुटों का रंग भी बहुत सुन्दर होता है और ये मुकुट वाली पेंगुइन इतनी अच्छी लगती हैं कि जी चाहता है कि देखते ही रहा जाए। कुछ पेंगुइन के सिरों पर परों के रंग सफेद अथवा किसी और रंग के होते हैं, जो इनके सिरों को और ज्यादा सुंदर बना देते हैं। इनकी सहायता से भी वैज्ञानिकों ने पेंगुइन को पहचाना है। कुछ पेंगुइन के सिर पर आंखों के ठीक ऊपर, आगे की तरफ से लेकर नीचे गर्दन तक सफेद, पीली या नारंगी रंग की परों की माला या कंठी-सी बनी होती है, जो देखने में बड़ी आकर्षक और लुभावनी होती है। ऐसी कंठी हम सभी ने तोतों के गलों में देखी है। वैसी ही खूबसूरत और रंग-बिरंगी कंठियां सिरों और गले दोनों में होती हैं। कुछ पेंगुइन के सिरों के पर गायब रहते हैं। वैसे ही जैसे कुछ आदमी गंजे होते हैं और सिर के कुछ हिस्सों पर उनके बाल नहीं होते। ऐसी पेंगुइन के चंदुए वाले सिर के हिस्से शरीर की गर्मी को बाहर निकालने में मदद देते हैं। असल में पेंगुइन को गर्मी बहुत सताती है और इस गर्मी को अगर शरीर से तुरंत बाहर न निकाल दिया जाए तो ये मर सकती हैं। इसी गर्मी को बाहरी हवा या पानी के संपर्क में लाकर जल्दी से जल्दी बाहर निकाला जाता है। इसके लिए जरूरी है कि ये पंछी चंदुए हों। लेकिन चंदुए वही होती हैं, जो गर्म प्रदेशों में रहती हैं।

(ख) *गर्दन* : पेंगुइन की गर्दनें छोटी होती हैं। क्योंकि इन्हें सिर चारों ओर घुमा-घुमाकर देखने की खास आवश्यकता नहीं पड़ती। गर्दन उन्हीं चिड़ियों की लंबी होती है, जिन्हें एक ही जगह से काफी दूर-दूर तक देखने की जरूरत चारों ओर पड़ती है। जैसे सारस की गर्दन काफी लंबी होती है। क्योंकि सारस काफी बड़ा पक्षी है। बड़ा

पक्षी एकदम चाहे तो बिना उपयुक्त तैयारी किए, नहीं उड़ सकता। इसलिए प्रकृति ने इन विशाल पक्षियों को लम्बी-लम्बी चोंचें और लम्बी-लम्बी गर्दनें दी हैं। लम्बी चोंच इसलिए कि ये धान के खेतों में अक्सर अपना भोजन खोजते हैं। धान के पौधों की लम्बाई में इनकी आंखें न छिप जाएँ, इसलिए इन्हें काफी लम्बी चोंच दी गई। जिससे इनका सिर ऊंचाई पर ही बना रहे और ये आने वाले खतरे को देखते भी रह सकें और जमीन पर से भोजन भी उठा सकें। लम्बी गर्दन का भी यही उपयोग है। जिससे ये भोजन करते समय दूर-दूर देखते रह सकें। और अगर इनका कोई दुश्मन इनके नजदीक आता हुआ, इन्हें दिखाई पड़े तो ये उपयुक्त समय रहते अपने भारी बदन को उड़ा सकें। लेकिन पेंगुइन समुद्रों में शिकार करती है और जमीन पर जब बैठती है, तो ऐसी जगह रहना पसंद करती है, जहाँ इसके दुश्मन कम-से-कम होते हैं, और इसे कोई खास खतरा नहीं हुआ करता। इसीलिए इसे दूर-दूर तक न देखने की जरूरत पड़ती है, न उड़ने की। इसीलिए इनकी गर्दनें छोटी होती हैं। कभी-कभी गर्दन के पर भी सिर की तरह ही काले होते हैं। कभी-कभी गले में कासी या किसी और रंग की धारियां होती हैं जो खूबसूरत कंठी या कंठमाला-सी लगती हैं। कभी-कभी इनकी कनपटिय और गर्दनों का रंग गहरा पीला और गहरा नारंगी होता है। खासकर महाराजा पेंगुइन और राजा पेंगुइन में। वैसे ज्यादातर गर्दनों की पीठ पर जो पर होते हैं, अक्सर काले होते हैं। और नीचे सीने की तरफ के हिस्से में जो पर होते हैं, वे या तो रंगीन होते हैं या फिर सफेद होते हैं।

(ग) *आँखें*: पेंगुइन की नजर उतनी पैनी और तेज नहीं होती, जितनी गिद्ध या चील आदि पक्षियों की होती है। गिद्ध की दृष्टि तो बहुत प्रसिद्ध है। जामवन्त जो गिद्ध महाशय ही थे, भारत वर्ष में ही बैठे-बैठे, लंका की अशोक वाटिका में बैठी हुई सीता माता को देख सके थे। यह उनकी दूरदृष्टि का कमाल था। गिद्ध और चीलें आकाश में कितनी ऊँचाई पर उड़ती रहती हैं और जमीन पर

जरा-सी चुहिया कोई मार कर मकान से बाहर फेंक दे तो तुरन्त ये नीचे आकर झपट्टा मार कर चुहिया उठा ले जाती हैं। इन्हें धोखा भी नहीं दिया जा सकता यानी इन्हें ऊपर से साफ दिखाई देता है कि मार कर जो बाहर फेंका जा रहा है, वह चूहा या और कोई भोजन है। कोई ऐसी चीज नहीं है जो उनके खाने की न हो। अगर उनके खाने की चीज न होगी तो वे नीचे उतर कर कभी भी झपट्टा नहीं मारेंगी। यह इनकी आंखों की नजर का कमाल है। लेकिन वैसी दूरदृष्टि की पेंगुइन को पानी में जरूरत नहीं है। और जब वह जमीन पर रहती है, तो अक्सर ऐसे वीरान बर्फीले मैदानों में रहती है कि दूर-दूर तक सिवाय बर्फ के और कोई नहीं होता। इसलिए इन्हें न ज्यादा दूर तक देखने की जरूरत पड़ती है, न देखती हैं। और न ही प्रकृति ने इन्हें ऐसी तेज नजर दी है, जैसी तेज नजर दूसरे पक्षियों को मिली है।

(घ) *सधड़* : धड़ इनका बहुत विशालकाय होता है। बहुत वजनी भी। और इस धड़ के परों के मुख्यतः दो रंग होते हैं। पीठ की तरफ हल्का काला या हल्का नीलापन लिए हुए सलेटी। और पेट व सीने की तरफ दूध-सा सफेद। लेकिन गर्दन के पास रंग-बिरंगा भी। या कभी-कभी गले में ये काले रंग का हार भी पहने होती हैं। धड़ का वजन 30-32 किलो तक होता है। इसीसे इसकी विशालता समझी जा सकती है। धड़ के बिल्कुल पिछले हिस्से में दो छोटी-छोटी झिल्लीदार टांगें लगी होती हैं। और धड़ के ऊपरी हिस्से में गर्दन के पास कंधों से लटके हुए दो हाथ होते हैं जो चप्पुओं या पतवारों की तरह एकदम चपटे होते हैं। बिल्कुल सीधे लटके हुए। इनसे पेंगुइन पानी में तैरने का काम लेती है। इन पंखों का रंग भी दो तरह का होता है। ऊपर की तरफ वैसा ही जैसा पीठ का होता है। और पंखों की निचली सतह के परों का रंग एकदम सफेद होता है। कंधे कभी-कभी रंग-बिरंगे होते हैं। इनके पंख मुड़ते नहीं हैं। वैसे ही सीधे कन्धे के पास से लटकते रहते हैं। या तैरते समय वहीं,

कन्धे के पास से ही ये पतवारों की तरह तेजी से चलते भी रहते हैं। जिससे ये पानी में खूब तेज तैर लेती हैं।

(च) *पूंछ*: पेंगुइन की पूंछ भी विशेष होती है। जैसा कि ऊपर ही कहा जा चुका है। यह बैठने में इन्हें सहायता दिया करते हैं। मजबूत, छोटी, मोटी और नुकीले परों वाली होती है। पूंछ के निचले हिस्से में पर नहीं होते। जिससे खाल दिखाई देती है। इसके कुछ लाभ भी हैं। पेंगुइन शरीर की गरमी बर्फ में निकालने के लिए उस खाल को बर्फ से सटा कर बैठ जाती है, जिससे इन्हें गरमी न लगे। जी हां! पेंगुइन के शरीरों में इतनी गरमी पैदा होती है कि इन्हें बर्फ के मैदानों में भी बैठे रहने पर गरमी लगा करती है। बर्फ की ठंड से बचना इनके लिए खास समस्या नहीं होती। बल्कि गर्मी से ही बचाव की समस्या इनकी खास समस्या हुआ करती है।

11. पक्षियों का शरीर बाहर से दो प्रकार की चीजों से पूरी तरह ढंका रहता है। एक तो पर, दूसरे साँप के ऊपर जैसी केंचुली-सी चढ़ी होती है, वैसी ही रचना जिन्हें शल्क या स्केल्स कहते हैं, वे इनके शरीरों के कुछ हिस्सों पर चढ़े हुए होते हैं। जैसे पैर के हिस्से। इनके पैरों में नाखून भी होते हैं। और चोंचों के ऊपर भी एक विशेष पर्त मढ़ी हुई होती है। पेंगुइन के पैर व चोंचें भी उसी तरह के होती हैं, जैसी दूसरे पक्षियों की होती हैं। अंतर बस झिल्ली का होता है। इनके पैरों की तीन अगली उँगलियां होती हैं। तीन आगे की तरफ झिल्ली में बंधी रहती हैं। एक पीछे की तरफ ऐढ़ी से निकली हुई रहती है। चारों उँगलियों में नाखून होते हैं। पेंगुइन के पैरों की एक और विशेषता होती है, इनके पैरों की खाल में खून की नलियों का बहुत ज्यादा जाल बिछा होता है, जिससे ये अपने खून को ज्यादा से ज्यादा टांगों और पंजों में फैला सकें और शरीर की ज्यादा गरमी बाहर निकाल सकें। या अण्डों को सेते वक्त बर्फ के बावजूद अण्डों को अपने शरीर की गरमी से बचा सकें।

12. इनके शरीर की खाल तो पतली होती है, लेकिन खाल के

नीचे चर्बी की परत काफी मोटी होती है। जो शरीर में भोजन की काफी मात्रा अपने भीतर भरे रहती है। यही कारण है कि पेंगुइन बिना खाए-पिए महीनों रह सकती है। यही खाल के नीचे जमा पूँजी की तरह की चर्बी उपवास के उन दिनों में पेंगुइन को जिन्दा रखती है। इनकी खाल में किसी प्रकार की ग्रंथियां नहीं होतीं। जैसी कि हम लोगों की खाल में होती हैं। हमारी खाल में पसीना निकालने वाली ग्रंथियां पाई जाती हैं। जिससे गर्मियों में खूब पसीना निकलता है। और उस पसीने के सहारे शरीर के भीतर जमा बहुत-सी गंदगी भी बाहर निकल जाती है। इस तरह का कोई प्रबंध पेंगुइन की खाल में नहीं होता। यानी पेंगुइन हमारी तरह पसीने से न लथपथ होती है, न पसीने-पसीने होती है। न पसीने से उसके शरीर में दुर्गन्ध पैदा होती है न कोई और गड़बड़ी।

13. पक्षियों के सीने पर बहुत ज्यादा मात्रा में मांस-पेशियां होती हैं। असल में जो कबूतर का या मुर्गे का मजा चखते हैं, वे इसी सीने वाले मांसल हिस्से को खाया करते हैं। सबसे ज्यादा मांस-पेशियां पक्षियों में यहीं होती हैं। क्यों? दरअसल पक्षी उड़ने वाला जीव है। और उड़ने के लिए पंखों को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। पूरे शरीर का वजन हवा में उछाले रखना पड़ता है। इसे सामान्य मांस-पेशियों से नहीं किया जा सकता। इसलिए प्रकृति ने इनके सीने पर एक काफी बड़ी हड्डी बनाई जिसे कील कहते हैं। इस कील की सारी चौड़ाई पर ढेर सारी मांस-पेशियां चिपकाईं। जो आदमी को खाने में मजा दें। लेकिन इन पक्षियों को उड़ने में बहुत मदद करें। पेंगुइन के पास भी सीने पर ऐसे ही मांस-पेशियां होती हैं। क्योंकि पेंगुइन को पानी में उड़ना पड़ता है यानी तैरना पड़ता है। जो हवा में तैरने यानी उड़ने से कहीं ज्यादा कठिन है। पंखों की हड्डियां इसीलिए पेंगुइन के शरीर में चपटी और चौड़ी होती हैं।

14. चिड़ियों की हड्डियां मजबूत तो बहुत होती हैं, लेकिन खोखली या पोली हुआ करती हैं। जिससे वे उड़ते समय ज्यादा वजनी

न हो जाएँ। उसी तरह की हड्डियां पेंगुइन की भी होती हैं।

15. इनके कूल्हे की हड्डी रीढ़ की हड्डी से जुड़ी हुई और काफी मजबूत होती है। जिससे चलते समय पैरों पर जो वजन पड़ता है, उसे ये हड्डियां सह सकें। और पानी में तैरते या हवा में उड़ते समय पक्षी के शरीर में जो पीछे की तरफ भयानक दबाव पड़ता है, उसे इनका पिछला हिस्सा सह सके।

16. इनके पेट में अन्य चिड़ियों की तरह ही एक मजबूत चक्की लगी होती है। इसे गिजार्ड कहते हैं। इस चक्की का वही काम होता है, जो हमारे घरों में चक्कियों का काम होता है यानी पीसना। इन चक्कियों की सहायता से ये पक्षी अपना कठोर-से-कठोर भोजन पीस डालती हैं। क्योंकि मुँह में भोजन को पीसने-चबाने के लिए इनके पास दांत नहीं होते। दांतों का काम पक्षी अपनी इन्हीं चक्कियों से लेते हैं। इसमें कभी-कभी ये बहुत सारे कंकड़ और पत्थर भर लेते हैं। कबूतरों को लोगों ने अक्सर कंकड़ खाते देखा है। दरअसल ये कंकड़ कबूतर या पेंगुइन अपने पेट की इन्हीं चक्कियों में एकत्र कर लेते हैं। जिनसे रगड़-रगड़ कर अपना भोजन ये पक्षी भीतर पीसा करते हैं। ऐसा अजीब प्रबंध और किसी भी जीव की आंत या पेट में नहीं होता। सिर्फ चिड़ियों की आंतों या पेटों में होता है।

17. चिड़ियाएँ गीत गाने के लिए मशहूर हैं। मैना बोल सकती है। तोता बोल लेता है। मोर बोलते हैं। महुए बगीचों में बोलते हैं। कोयलें आमों पर कूकती हैं। पेंगुइन भी बोलती हैं। अपनी खुशी-दुख, खतरा या भय आदि ये अपनी आवाज से ही प्रकट करती हैं। इनकी आवाज कैसी होती है ? बहुत से वैज्ञानिकों ने इनके समीप जाकर इनकी आवाजें सुनी और टेप रिकार्डों में टेप की हैं। ये लगभग कुकियाती हुई जोर-जोर से सीटी मारती-सी चीखती हैं। इनकी आवाजें अक्सर बहुत तीखी और कान फोड़ने वाली होती हैं। जिनकी आदमी आसानी से नकल कर सकता है। जैसे हम लोग कोयल की आवाज की नकल करके कोयल को चिढ़ा लेते हैं, और उसे ज्यादा

से ज्यादा चिल्लाने पर मजबूर कर देते हैं, वैसे ही पेंगुइन की आवाजों की नकल करके हम पेंगुइन को भ्रम में डाल सकते हैं। और अच्छी नकल करने पर तो पेंगुइन को अपने पास एकत्र भी कर सकते हैं। अपनी जैसी आवाज सुन कर पेंगुइन को पेंगुइन का शिकार करने का शौक होता है, वे इन्हें अपने नजदीक बुलाने के लिए यही काम किया करते हैं। उनकी बोली बोलते हैं और भोली-भाली पेंगुइन उनके पास दौड़ी चली आती हैं।

18. पेंगुइन का दिमाग और दूसरी चिड़ियों की तरह ही होता है। उनमें उतनी ही समझ होती है, जितनी दूसरी चिड़ियों में होती है।

19. सूंघने की शक्ति दूसरी चिड़ियों की तरह ही पेंगुइन में भी नहीं होती। इन्हें न बदबू महसूस होती है, न फूलों की सुगंध से ये प्रभावित होती हैं। यही कारण है कि गिद्ध सड़े-गले मरे हुए जानवर के पास बैठा हुआ मांस चाँव-चाँव कर खाता रहता है। जबकि आदमी उसके पास की बदबू के कारण निकलने तक से कतराता है। पेंगुइन जहाँ महीनों बैठती हैं, और लाखों की संख्या में बैठती हैं, वहाँ भी बदबू बहुत ज्यादा हो जाती है। क्योंकि वहां इनके सड़े-गले अण्डे, मरे हुए चूहे या बच्चे या मरी हुई पेंगुइन के अलावा बहुत सारी बीटें, टूटे या त्यागे गए पर और उगली गई गंदगी एकत्र रहती है। इस गंदगी के कारण मीलों दूर तक असहनीय बदबू उड़ती है। लेकिन पेंगुइन की सेहत पर उस बदबू का कोई असर नहीं पड़ता। ये उसी तरह मजे में बैठी रहती हैं। क्योंकि इनकी नाकों में सूंघने वाली नलिकाएँ नहीं होतीं, जो हमारी नाक में होती हैं। लेकिन इनकी नाक की एक विशेषता होती है। नाक के भीतर जो खाल की पर्त होती है, उसमें खून की पतली नलियों का जाल बिछा हुआ होता है। और वहाँ जो खून का तेज दौरा रहता है, उससे इनके शरीर की काफी गरमी बाहर निकलती रहती है जो पेंगुइन के लिए काफी जरूरी है।

20. इनके फेफड़ों में पतली झिल्ली के पारदर्शक सहायक फेफड़े

पेंगुइन का शिकार करते कुछ शिकारी

होते हैं और दूसरे पक्षियों में भी। और ये सहायक फेफड़े, जिन्हें हवा के थैले कहा जा सकता है, एक-दो नहीं होते बल्कि पूरे नौ होते हैं। और जब इनमें हवा भर जाती है, तो पारदर्शक महीन गुब्बारे से नजर आते हैं। सभी पक्षियों में इन गुब्बारे जैसे सहायक फेफड़ों का एक ही काम है, और वह काम है पक्षियों के उड़ते समय, जब कि बहुत ज्यादा पक्षी को मेहनत करनी पड़ती है, जिसकी वजह से बहुत ज्यादा गर्मी इनके शरीर में पैदा हो जाती है, इस गरमी को ज्यादा-से-ज्यादा शरीर से बाहर निकालने में इन हवा के विशेष थैलों का उपयोग पक्षी करता है। पेंगुइन भी तैरते समय इन थैलों की सहायता से बनी हुई ज्यादा गरमी बाहर निकाल देती है। इस तरह ये हवा के थैले इनके शरीरों में खिड़कियां हैं। जिनसे ज्यादा-से-ज्यादा कमरे की गरमी बाहर चली जाया करती है।

21. दूसरे पक्षियों और मनुष्यों की तरह पेंगुइन के हृदय के भी चार भाग होते हैं। चार कमरों का बना हुआ हृदय होता है। जो इनका शुद्ध रक्त बिल्कुल अलग और अशुद्ध रक्त बिल्कुल अलग रखता है। यह भी वैसे ही धड़कता है, जैसे हर पक्षी अथवा जीव का धड़कता है।

22. नर और मादा पक्षी अलग-अलग होते हैं। जैसे मोर में नर पक्षी वह होता है, जो बहुत बड़ा और खूबसूरत पर रखता है। और बगीचों व खेतों से लेकर हमारी छतों तक अक्सर बरसात में हमें नाचता हुआ दिखाई देता है, और जिसके गिरे हुए परों से हम मोरपंख के पंखे व झाड़न आदि बनाते हैं। और मादा मोर वह होती है, जो उसके आस-पास छोटे आकार की घूमती रहती है। इसी तरह नर तोता वह होता है, जिसके कंठ पर कंठी होती है। और जिसके कंठ पर कंठी नहीं होती। यह मादा तोता होती है यानी तोती। इसी तरह नर और मादा पेंगुइन को भी बिल्कुल अलग-अलग पहचाना जा सकता है। पक्षियों के संसार में एक और विचित्र बात रहती है। नर अक्सर मादा पक्षी से ज्यादा खूबसूरत होता है जैसे मोर। जैसे कंठी

वाला नर तोता उसी तरह नर पेंगुइन मादा से ज्यादा सुन्दर होता है, ज्यादा बलवान होता है, ज्यादा नटखट और मेहनती होता है।

23. अण्डे देने से पहले सभी पक्षियों की तरह पेंगुइन में भी संगम होता है। नर और मादा पेंगुइन जोड़ा बाँधती हैं। तब मादा अण्डे देती है। अण्डे अक्सर बराबर के नहीं होते। कभी पहला अण्डा, दूसरे से बड़ा होता है तो कभी दूसरा अण्डा पहले से बड़ा होता है। कभी-कभी कुछ पेंगुइन सिर्फ एक ही अण्डा देती हैं और कुछ ऐसी पेंगुइन हैं जो तीन या तीन से ज्यादा अण्डे देती हैं। लेकिन यह अक्सर देखा गया कि चूजा एक ही अण्डे से निकलता है। जो अक्सर आकार का बड़ा अण्डा होता है, उसी का निकला हुआ चूजा जीवित रहता है। बाकी के अण्डों से निकले हुए चूजे भी अक्सर कुछ दिनों बाद मर जाते हैं और अक्सर तो बाकी अण्डे पेंगुइन सेती तक नहीं है। बिना सेये वे खराब हो जाते हैं। और ज्यादातर पेंगुइन के घोंसले के बाहर पड़े हुए दिखाई देते हैं।

24. मादा पेंगुइन अण्डे देकर तुरन्त भाग जाती है और नर पेंगुइन उन अण्डों को सेने का काम करता है। महीने-डेढ़ महीने तक अण्डे को सेने के बाद, जब उसमें से चूजा निकल जाता है, तो मादा समुद्र से वापस लौट आती है और उस चूजे की देख-भाल व उसके भोजन का प्रबंध खुद करती है। और तब तक उपवास करता हुआ नर पेंगुइन तुरन्त घोंसले से बाहर चला जाता है। समुद्र पर पहुँचकर शिकार करता है और महीने-डेढ़ महीने की अपनी भयानक भूख मिटाता है।

25. पेंगुइन और चिड़ियों की तरह ही अपने बच्चों की बहुत परवाह करती है। लेकिन नयी पेंगुइन जो पहली बार अण्डे देती हैं, वे बड़ी लापरवाह होती हैं। और अक्सर वे न तो अपने अच्छे घोंसले बनाती हैं और न अपने अण्डों को अच्छी तरह पूरे मन से सेती हैं। नतीजा यह होता है कि उनके अण्डे अक्सर बेकार चले जाते हैं और अगर उनसे चूजे निकलते भी हैं, तो उनकी लापरवाही के कारण मर

जाते हैं।

26. और सब चिड़ियों की तरह पेंगुइन साल में दो या एक बार अण्डे नहीं देतीं। बल्कि अक्सर तीन साल में एक बार अण्डे देती हैं। अण्डे से चूजा निकलने में ही 6-7 सप्ताह लग जाते हैं। फिर चूजे आदमी के बच्चों की तरह ही काफी दिनों में बढ़ कर इस योग्य हो पाते हैं कि वे अपनी जिन्दगी अपने मां-बाप से अलग रह कर जी सकें।

पेंग्विइनें कहाँ-कहाँ पायी जाती हैं

जैसा कि शुरू में ही कहा जा चुका है कि पेंगुइन को लोगों ने इसलिए विरल और कम पाई जाने वाली चिड़िया समझ लिया था कि वह अक्सर ऐसे स्थानों पर रहने की आदी है, जहाँ आदमी या तो पहुँचता नहीं है, और पहुँचता भी है तो दिन में ये समुद्रों में रहती हैं और काफी रात को ही किनारे पर आती हैं, जिस कारण आदमी को ये अक्सर दिखाई नहीं दिया करती। आदमी समझता है, संसार में पेंगुइन बहुत कम हैं। लेकिन वैज्ञानिकों की खोजी नजरों ने इन्हें गिना और इनका गहरा अध्ययन किया। हालांकि इनका अध्ययन करना आसान नहीं है। फिर भी संसार के जिन-जिन देशों और द्वीपों पर पेंगुइन पाई जाती हैं, संक्षेप में उनके नाम निम्न हैं :

1. *दक्षिणी ध्रुव* : पेंगुइन का मुख्य निवासस्थान है दक्षिणी ध्रुव। इस पर साल के बारहों महीने बर्फ जमी रहती है और पेंगुइन इस ध्रुव पर बिना किसी झिझक या परेशानी के सबसे ज्यादा तादाद में रहती है। जितनी पेंगुइन की जातियां पाई जाती हैं, उनमें ज्यादातर यहीं रहना पसंद करती हैं। इनका मुख्य कारण यह है कि दक्षिणी ध्रुव बहुत बड़ा देश-द्वीप है। इसके चारों ओर दूर-दूर तक समुद्र लहराता रहता है। और दक्षिणी ध्रुव पर स्वयं पर हमेशा बर्फ रहने से वहां आज तक आदमी जाकर बस नहीं पाया। आदमी नहीं पहुँचा तो आदमी के साथ पेंगुइन के दूसरे दुश्मन भी वहाँ नहीं पहुँचे। नतीजा
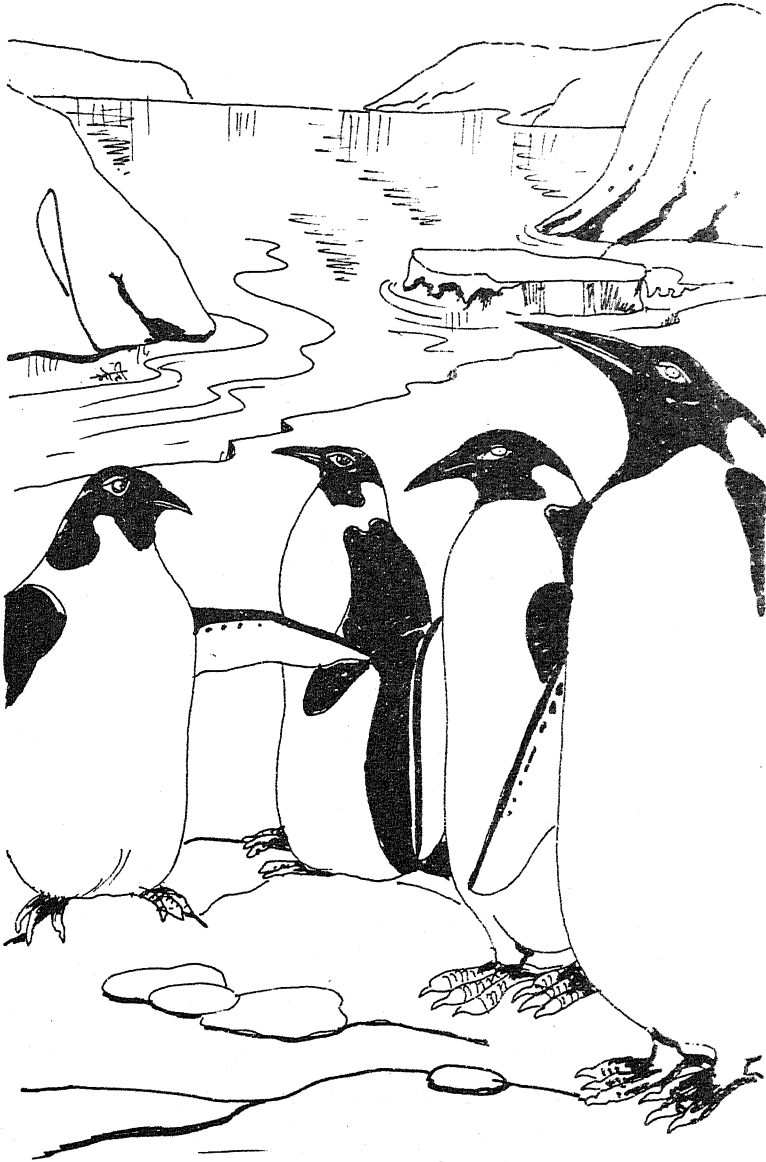
दक्षिणी-ध्रुव में जमी बर्फ पर पेंगुइन

यह हुआ कि पेंगुइन को अपने लिए यह सबसे सुरक्षित जगह प्रतीत हुई। हजारों मील लंबे-चौड़े इस देश में पेंगुइन अकेले जीव हैं, जो बड़े चैन से रहते हैं। जिन वैज्ञानिकों ने पेंगुइन की खोज की हैं, उन्हें यहाँ जरूर जाना पड़ा है। वैसे भी, आदमी दक्षिण ध्रुव पर रहने के लिए भले ही न पहुँच पाया हो, लेकिन वैज्ञानिक खोजों के लिए तो वैज्ञानिक जाते ही रहते हैं। अभी सन् 1961 में ही कई वैज्ञानिकों का दल वहाँ गया था, और उस दल ने बड़ी उपयोगी खोजें वहाँ पहुँच कर की हैं। पेंगुइन की यों तो 22-23 जातियां होती हैं। वैसे ही जैसे कुत्तों और मुर्गी की तमाम जातियाँ होती हैं। लेकिन इन 22-23 जातियों में महाराजा पेंगुइन तथा राजा पेंगुइन के नाम प्रमुख हैं। ये दरअसल पेंगुइन की सारी जातियों में सर्वश्रेष्ठ पेंगुइन हैं। एक तो आकार में सबसे बड़ी हैं। इनकी संख्या इस दक्षिणी ध्रुव पर सबसे ज्यादा है। ये जिन्दा भी सबसे ज्यादा रहती हैं। ये दुश्मनों की शिकार भी सबसे कम होती हैं। ये बिना खाना खाए भी सबसे ज्यादा दिनों तक जिन्दा रह सकती हैं। ये सुन्दर भी सबसे ज्यादा होती हैं। इनमें समझ भी और पेंगुइनों से ज्यादा होती है। मतलब यह कि इन पेंगुइन का नाम महाराजा पेंगुइन और राजा पेंगुइन बिल्कुल ही उपयुक्त है। लेकिन ऐसा ही नहीं है कि महाराजा और राजा पेंगुइन दक्षिणी ध्रुव के अलावा कहीं और जाती न हों। ये दूसरे भी तमाम द्वीपों और स्थानों की सैर करती हैं। और कभी-कभी तो अण्डे भी दूसरे ऐसे द्वीपों पर दे आती हैं, जो पूरी तरह बर्फ से ढका हुआ हो।

2. *आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड* : दक्षिणी ध्रुव के बाद पेंगुइन अगर सबसे ज्यादा पाई जाती हैं तो आस्ट्रेलिया के दक्षिणी हिस्से, पूरे न्यूजीलैंड में और साथ ही न्यूजीलैंड व दक्षिणी आस्ट्रेलिया के आस-पास के सारे द्वीपों पर। जिनमें चैयाम, बोन्टी, ऐंटीपोड्स, आकलैंड, कैंपबेल, मैक्वेरी, स्टीवर्ट, स्नेयर्स, टस्मानियां, बास, स्टेट व अन्य दर्जनों छोटे-छोटे द्वीप शामिल हैं। इन सभी पर पेंगुइन की तमाम जातियाँ पाई जाती हैं।

3. *दक्षिणी अफ्रीका तथा उसके पास के द्वीप* : दक्षिणी अफ्रीका तथा उसके आस-पास के द्वीपों पर भी पेंगुइन की घनी बस्तिया हैं। और अण्डे देने कई पेंगुइन की जातियां वहां जाना पसंद करती हैं।

4. *दक्षिणी अमरीका तथा पास के द्वीप* : दक्षिणी अमरीका के भी कई हिस्सों में पेंगुइन की कई जातियां निवास करती हैं। और आस-पास के दर्जनों द्वीप हैं, जिनमें पेंगुइन बहुतायत से पाई जाती हैं। जैसे फाकलैंड, वाल्डीविया, दक्षिण जार्जिया, दाक्षण सैंडविच द्वीप समूह आदि।

दक्षिणी ध्रुव के समीप के द्वीप : दक्षिणी ध्रुव के आस-पास भी तीस-चालीस छोटे-बड़े द्वीप हैं, जो दक्षिण ध्रुव से सैकड़ों मील दूर भी हैं और बिल्कुल लगे-सटे हुए भी। इन द्वीपों पर भी पेंगुइन की घनी बस्तियां हैं।

पेंग्विइनों की जातियां और उनके आकार व वजन

अगर हम हर देश और हर द्वीप की पेंगुइन का बहुत ध्यान से अध्ययन करें तो हमें लगभग इतने प्रकार की पेंगुइन खासतौर पर मिलेंगी :

1. महाराजा

इनका आकार लगभग चार फीट लंबा और दो-ढाई फीट चौड़ा होता है। ये सबसे विशालकाय पेंगुइन हैं। और अगर पूरी तौर पर तन कर खड़ी हो जाएँ तो खासे आदमी जैसी दिखाई देती हैं। इनका रंग भी सबसे सुन्दर होता है। इनका वजन लगभग 30-32 किलो होता है। ये ज्यादातर दक्षिणी ध्रुव व उसके आस-पास वाले द्वीपों पर पायी जाती हैं।

2. राजा

ये लगभग 3 फीट ऊँची होती हैं। इनका वजन भी लगभग 16-17

किलो होता है। यह बहुत से द्वीपों पर पाई जाती हैं।

3. पीली आँखों वाली पेंगुइन

6-7 किलो वजन वाली और लगभग ढाई फुट ऊँचाई वाली यह चिड़िया भी न्यूजीलैंड व उसके आस-पास के कई द्वीपों पर पाई जाती है। इस चिड़िया की खास बात है इसकी आँखें काली न होकर पीली होती हैं। और गुस्सा होने पर यह काफी डरा देती है।

4. एडली

इस प्रकार की पेंगुइन कसा वजन 5 किलो के करीब होता है। और ऊँचाई ढाई फुट। यह ज्यादातर दक्षिणी ध्रुव व उसके आस-पास के द्वीपों पर रहती है।

5. चिन्सटैप

यह भी दक्षिणी ध्रुव व उसके आस-पास वाले द्वीपों पर रहने वाली पेंगुइन है। इसका वजन 5 किलो तथा आकार 2 फुट से कुछ ही ज्यादा होता है।

6. दक्षिणी गेंट्ज

इनका वजन 7 किलो के करीब होता है। और आकार में ये लगभग 3 फुट ऊँची होती हैं। यह भी दक्षिणी ध्रुव व उसके आस-पास के द्वीपो पर रहती हैं।

7. उत्तरी गेंट्ज

वजन में 6 किलो के आस-पास और आकार में भी लगभग तीन फीट। लेकिन ये ज्यादातर दक्षिणी ध्रुव से दूर और उत्तर की ओर रहती हैं।

8. मेक्वेरी गेंट्ज

वजन में 5 किलो और ऊँचाई में ढाई फीट। निवास मुख्यतः मेक्वेरी द्वीप

9. मेकेरोनी पेंगुइन

मेकेरोनी पेंगुइन का वजन 4 किलो तथा ऊँचाई ढाई फीट के लगभग होती है। यह दक्षिणी अमरीका के आस-पास वाले द्वीपों पर पाई जाती है।

10. रायल पेंगुइन

वजन 5 किलो के आस-पास व ऊँचाई दो फीट। इनके सिर पर कलंगी होती है जो मुकुट की तरह लगती है। मेक्वेरी द्वीप पर रहती है।

11. ऊपर उठी कलंगी वाली पेंगुइन

इन पेंगुइन की कलंगी ऊपर को उठी हुई होती है और अगल-बगल में पंडित जी की दो चोटियों की तरह सीधी खड़ी दिखाई देती हैं। वजन में 5 किलो और ऊँचाई में 2 फुट। ऐंटीपोड्स, बोन्टी तथा कैंपबैल आदि द्वीपों पर रहती है।

12. चट्टानों पर अण्डे देने वाली पेंगुइन

इसके सिर पर भी कलंगी होती है। वजन में 3 किलो। ऊँचाई में 2 फीट। तमाम द्वीपों पर इसका निवास है।

13. जोर्डलैंड पेंगुइन

इसकी कलंगी नीचे की तरफ झुकी हुई होती है। जैसे किसी नन्हीं-सी बच्ची की दो चोटियाँ की गईं हों और दोनों कानों के ऊपर लटकी हुई हों। 3 किलो वजन व ऊँचाई 2 फीट। निवास ज्यादातर दक्षिणी

न्यूजीलैंड व स्टीवर्ट द्वीप पर।

14. पेरूवियन पेंगुइन

बिना कलंगी की होती है। दक्षिणी अमरीका के आस-पास वाले द्वीपों पर रहती है। इसका 4 किलो वजन होता है। आकार ढाई फीट।

15. गेलेपेगोज द्वीप वाली पेंगुइन

दक्षिणी अमरीका के उत्तर की तरफ एक बहुत ही प्रसिद्ध द्वीप है गेलेपेगोज। इस पर पाई जाने वाली पेंगुइन इसी के नाम से जानी जाती है। इसका वजन 2 किलो तथा ऊँचाई डेढ़ फुट। कलंगी इसके भी नहीं होती।

16. मेगेलेनिक पेंगुइन

बिना कलंगी की कंठी और मालादार धारियों से सुसज्जित पेंगुइन है। इसका वजन 5 किलो। ऊँचाई ढाई फीट। दक्षिणी अमरीका व उसके आस-पास के द्वीपों पर इसका मुख्य निवास।

17. काले पैरों वाली पेंग्विइन

वजन 3 किलो। ऊँचाई 2 फीट। दक्षिण अफ्रीका और उसके आस-पास के द्वीपों पर पाई जाती है।

18. दक्षिणी नीली पेंगुइन

दक्षिणी न्यूजीलैंड तथा स्टीवर्ट द्वीप पर रहती है। आकार में बहुत छोटी होती है। बिना कलंगी की होती है। गहरे नीले रंग की इसकी पीठ होती है। कुल वजन एक किलो और ऊँचाई एक फुट चार इंच।

19. उत्तरी नीली पेंगुइन

आस्ट्रेलिया तथा उसके आस-पास के द्वीपों पर रहती है। एक किलो वजन। एक फुट चार इंच लम्बाई।

20. चैथम द्वीप की नीली पेंगुइन

वजन एक किलो। ऊँचाई एक फुट तीन इंच।

21. सफेद डैनों वाली पेंगुइन

डेढ़ किलो वजन। एक फुट चार इंच ऊँचाई। न्यूजीलैंड और उसके आस-पास के द्वीपों पर निवास।

पेंगुइन के अंडे और आदमी

आदमी मुर्गी और बत्तख के अंडे अक्सर खाता है। कच्चे भी, उबाल कर भी। सेंडविचों के साथ भी और दूध में घोल कर भी। बहुत से लोग अंडों की सब्जी भी बनाते हैं और बड़े चाव से खाते हैं। और भी तमाम प्रकार की चीजें भोजन के रूप में अंडों से आदमी तैयार करता और खाता है। पेंगुइन के अंडे तो मुर्गी के अंडों से काफी बड़े होते हैं। इसलिए उन्हें तो आदमी और ज्यादा खाना पसंद करता है। महाराजा पेंगुइन का अंडा आधा किलो के लगभग वजन का होता है और तीन भूखे आदमियों का पेट भरने के लिए काफी होता है। राजा पेंगुइन का अंडा लगभग 400 ग्राम का होता है। मनुष्य सदियों से पेंगुइन के अंडे खाता आया है। आज भी कई देशों और अनेक द्वीपों में पेंगुइनों के अंडे भोजन के साथ जरूर खाए जाते हैं। हालांकि कुछ देशों की सरकार ने इनके अंडे खाने पर रोक लगा रखी है। क्योंकि पेंगुइन की संख्या इनके अंडे खाने से कम होती जा रही है। और आदमी नहीं चाहता कि ये शानदार पक्षी इन द्वीपों पर समाप्त हो जाएं। लेकिन सरकार के कानून बना देने से ही तो इनके अंडों को खाने से रोका नहीं जा सकता। आदमी अब चोरी-छिपे अंडे खाते हैं। वैसे ही जैसे अपने देश में शराब और गांजा पीते हैं। जिन देशों में सभ्यता का ज्यादा विकास नहीं हुआ है, और जहाँ पेंगुइन की काफी संख्या है, वहाँ पेंगुइन के अंडे रोज हजारों की तादाद में खाए जा रहे हैं। खाए जाते रहे हैं। खाए जाते रहेंगे।

फँसानें के लिए मछली के चारे के रूप में समुद्रों में काम में लाता हैं। यानी पेंगुइन को मारता है और मछलियाँ फाँसता है।

पेंगुइन कैसे पकड़ी जाती हैं और अंडे कैसे पाए जाते हैं

पेंगुइन को पकड़ना शायद हर चिड़िया को पकड़ने से आसान है। ये जब समुद्रों से निकल कर बाहर किनारे पर आराम करने आती हैं और रात के समय खामोश बैठी होती हैं, तो इन्हें कोई भी पकड़ सकता है। ये आदमी को देख कर दूसरे पक्षियों की तरह भागती नहीं हैं। वहीं बैठी रहती हैं और मजे से पकड़ ली जाती हैं। इनके अंडे पाने के लिए जहाँ ये अंडे देती हैं, वहाँ पहुंच कर इनके घोंसलों से अंडे उठाने पड़ते हैं। अंडे पेंगुइन अपने पैरों के ऊपर और पेट के नीचे दबा कर रखती है। इसलिए अंडे पेंगुइन से छीनना आसान नहीं होता। जब आदमी उनके अंडों के लिए उनकी ओर हाथ बढ़ाता है तो ये गुस्सा हो जाती हैं, और आदमी पर अपनी चोंच से हमला कर देती हैं। महाराजा पेंगुइन तो आकार में भी आदमी के बराबर ही होती है, इसका अंडा छीनना सबसे ज्यादा कठिन होता है। यह आदमी पर ऐसा भयानक हमला करती है कि आदमी को जान बचानी मुश्किल हो जाती है। इसकी चोंच के एक ही वार में आदमी के हाथों से खून का फव्वारा छूट पड़ता है। एकदम भाला-सी इनकी चोंच आदमी के माँस में घुप जाती है। लेकिन आदमी भी कम चालाक नहीं है। वह महाराजा पेंगुइन को या तो धोखा देकर अंडे को उठा लेता है या फिर उन्हें डरा-मार कर उनके अंडे ले लेता है। कभी-कभी शोर मचा कर उन्हें वहाँ से हटा देता है और उनके अंडे उठा लेता है। शिकारी कुत्तों को साथ लाकर आदमी न केवल पेंगुइन का शिकार आसानी से करते हैं, बल्कि उनके अंडे भी बिना किसी कठिनाई के उठा लेते हैं। पेंगुइन अक्सर बंदरों की तरह आदमी को सिर्फ भभकी ही दिया करती हैं। आदमी से बंदरों की तरह डरती वे भी हैं। इसलिए जब पेंगुइन आदमी को अपनी ओर आती देखती हैं, तो घोंसले में

एक ओर को खिसक जाती हैं और भयभीत नजरों से आदमी की ओर घूरती रहती हैं। कभी-कभी डर कर सिमट तक जाती हैं। और जब आदमी उन्हें पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाता है तो चुपचाप अपने को आदमी के हाथों में सौंप देती हैं। पेंगुइन के इस व्यवहार को देख कर आदमी को इन बेचारे और सीधे जीवों पर दया भी कम नहीं आती। लेकिन चूँकि आदमी को इन पक्षियों से फायदा बहुत है, इसलिए वह इनका व्यापार भी खूब करता है। कई द्वीपों और देशों में पेंगुइन की चर्बी से तेल निकालने के कारखाने आदमी ने चला रखे हैं। और हजारों टीन तेल रोज बन कर तैयार किया जाता है जिसे कई देशों में बेचा और खाया जाता है। और बेचारी ये भोली-भाली चिड़ियाएँ उन कारखानों के कोल्हुओं में पिल-पिल मरती-खपती रहती हैं।

कुशल तैराक और डुबकैलिया पेंगुइन

पेंगुइन कदाचित् समुद्र में तैरने वाली सभी चिड़ियों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ तैराक है। वह समुद्र में बिना किसी झिझक के मीलों तैरती चली जाती है। किनारों से 10-20 मील दूर तक समुद्र में चले जाना तो जैसे उनके बाएँ हाथ का खेल है। लेकिन कभी-कभी पेंगुइन 100-125 मील दूर तक तैरती हुई एक द्वीप से दूसरे द्वीप या देश तक की समुद्री यात्रा कर डालती हैं। इनके तैरने की सबसे बड़ी खूबी है कि ये तैरती कुछ इस तरह हैं कि थकती कतई नहीं हैं। इसीलिए ये पानी में महीनों तैरती रहती हैं। बिना किसी परेशानी के। लेकिन रात के समय ये पानी में घुसने से डरती हैं क्योंकि रात में समुद्र के पानी में मौजूद अपने दुश्मनों को यह देख नहीं पाती हैं।

डुबकी लगा कर पानी की गहराई में गोता लगा जाना भी इन्हें बहुत अच्छी तरह आता है। ये बड़ी अच्छी गोताखोर होती हैं। बड़ी पेंगुइन तो काफी गहरे पानी में उतर जाती हैं। क्योंकि उनका वजन इतना होता है कि समुद्र के वजनी पानी में वे आसानी से गोता लगा
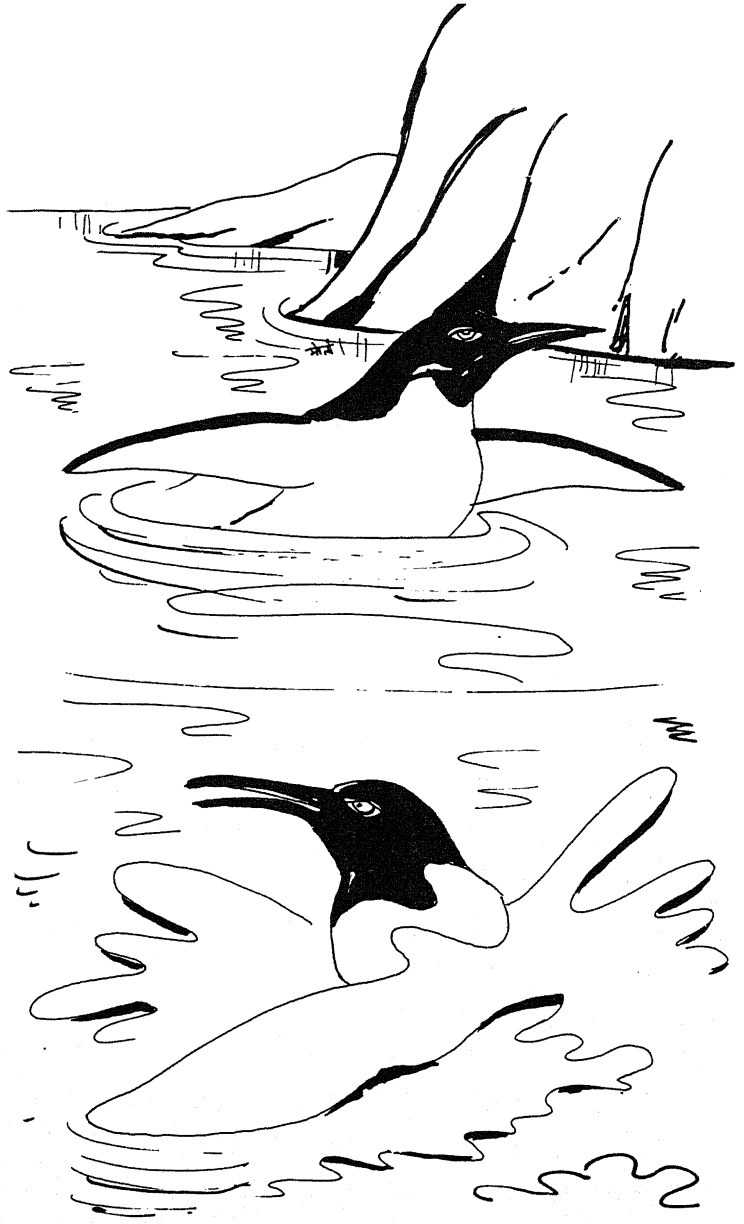
पानी में तैरती पेंगुइन

सकें। लेकिन छोटी और हल्की पेंगुइन से गहरे गोते लगा पाना संभव नहीं होता। क्योंकि उनके बदन का जितना घनत्व होता है, लगभग उतना ही घनत्व समुद्री पानी का भी होता है। इसलिए प्रयत्न करने पर बहुत थोड़ी देर और कुछ ही फुट गहरा गोता ये लगा पाती हैं।

तैरने का तरीका

पेंगुइन के तैरने का तरीका बड़ा अद्भुत होता है। पानी में रहने वाले ऊदबिलाव को अक्सर चिड़ियाघरों में देखा होगा। वह मछली कैसे पकड़ता है, यह भी सबने देखा होगा। बस कुछ-कुछ उसी की तरह पेंगुइन भी पानी में तैरती है। यानी यह बार-बार पानी की सतह पर उछल आती है और बार-बार डुबकी लगा जाती है। इस तरह यह पानी में ऊपर-नीचे लहराती हुई तेजी से तैरती चली जाती है। ऊपर इसलिए उछल कर आती है कि इसे हर मिनट के बाद साँस लेने पानी की सतह के ऊपर आना पड़ता है और जैसे ही इसने साँस ली कि फिर डुबकी लगा जाती है।

पेंगुइन कभी अकेली नहीं तैरती

पेंगुइन कभी अकेली नहीं तैरती। इन्हें अकेले में समुद्र में अपने दुश्मनों का बड़ा डर लगता है। इसलिए हमेशा ये दर्जनों की संख्या में गोल घेरा बना कर तैरा करती हैं और जरा भी खतरा महसूस होने पर एक ही मिनट में फटाफट पानी के बाहर आ जाती हैं। तैरते समय दल की नेता पेंगुइन की नजरें हमेशा खतरे के लिए सतर्क रहती हैं। जैसे ही इन्हें खतरा नजर आया ये अपने डैनों से पानी को इस तरह छपछपा देती हैं कि आस-पास की सारी पेंगुइन पलक झपते ही समझ जाती हैं कि कहीं खतरा है और उनके नेता ने देख लिया है। बस फिर क्या । एक मिनट भी नहीं हो पाता और सारी पेंगुइनें पानी के बाहर किनारे पर आ बैठती हैं और डरी-डरी नजरों से समुद्र के पानी को घूरती रहती हैं। जब खतरा टल जाता है तो

फिर सब एक-एक छपाछप शोर मचाती किलकारती हुई पानी में कूद ज्राती हैं। इनको खतरे की सूचना डैनों को पानी के ऊपर विशेष रूप से छपछपा देने से मिलती है। आदमी चाहे तो उस आवाज की ताली बजा कर नकल कर सकता है। वैज्ञानिकों ने नकल करके पेंगुइन को अक्सर बहुत तंग किया है। समुद्र के किनारे वैज्ञानिक खड़े हुए और मजे से किलोलें करती तैरती पेंगुइन को देख कर छपछपाती ताली बजा डाली। और पेंगुइन के होशहवास गायब। उनमें भगदड़ पड़ जाती है। हड़बोंग मच जाता है और सारी की सारी पेंगुइन हड़बड़ाती, घबराती हुई पानी से बाहर आ जाती हैं। और डर से खड़ी काँपती रहती हैं।

पेंगुइन दुश्मनों के भय के कारण ही किनारों से ज्यादा दूर तैरती हुई नहीं जाया करतीं। क्योंकि खतरा देखते ही इन्हें किनारे की तरफ भाग आना पड़ता है। वैसे ये समुद्र में तैरने की इतनी शौकीन होती हैं कि ये बिना तैरे रह ही नहीं सकतीं। तैरना इनके लिए रोज की जरूरत है। रोज की कसरत की तरह।

पंडित पेंगुइन

कुछ पेंगुइनें को तो जैसे बिना नहाए खाना-पीना ही हजम नहीं होता। यहाँ तक कि वे सुबह बिना नहाए रह नहीं सकतीं। इसलिए जब ऐसी पेंगुइन समुद्र से मीलों दूर किसी देश या द्वीप पर अंडे देने जाती हैं तो बड़ी विकट समस्या पैदा हो जाती है। क्योंकि बिना नहाए इन्हें चैन नहीं पड़ता। इनका जनेऊ खंडित हुआ जाता है। इसलिए ऐसी पेंगुइन आस-पास की किसी नदी, झील या तालाब को तलाश लेती हैं और सुबह तड़के उठ कर उस के ताजे पानी में नहा-धो कर आ जाती हैं। नहाने से इनके शरीर की न केवल गंदगी दूर होती है बल्कि तरह-तरह के रोग फैलाने वाले परजीवियों से भी ये अपने को बचा लेती हैं। सफाई और स्वच्छता का महत्त्व इन्हें आदमी से कम नहीं पता है।

तैरने के उपयुक्त इनके पर

दसियों घंटे लगातार समुद्र में तैरने पर भी इनके पर भीग कर खराब नहीं होते। जैसा कि दूसरी चिड़ियों में देखने को मिलता है। दूसरी चिड़ियाँ जरा भी बरसात में भीग जाएँ तो उनकी दशा बड़ी खराब हो जाती है और वे उड़ने में भी असमर्थ हो जाती हैं। जबकि पेंगुइन घंटों बाद पानी से बाहर निकले तो भी उसके पर वैसे के वैसे ही बने रहते हैं। ऐसा क्यों है ? इसका कारण है, उनके परों के ऊपर एक विशेष प्रकार का मोम-सा लगा रहता है जो उन पर पानी का असर नहीं पड़ने देता। दूसरे इनके पर इतने घने होते हैं कि उनके बीच पानी को घुसने का अवसर नहीं मिलता। जो किसी भी तरह पानी को खाल के नजदीक तक नहीं आने देता। यही कारण है कि बिना किसी खास परेशानी और शारीरिक हानि के पेंगुइन समुद्र में घंटों तैरती रहती है। इनके पैरों की बनावट भी कुछ इस तरह की होती है कि उन पर पानी का प्रभाव कम से कम पड़ता है और पानी इनके ऊपर से तुरन्त ढुलक जाता है।

पानी से बाहर जाने पर पेंगुइन कैसी दिखती है ?

जिस तरह नहा लेने के बाद आदमी ज्यादा स्वस्थ और सुन्दर नजर आता है। उसी प्रकार पेंगुइन जब पानी से बाहर आती हैं, तो ज्यादा खूबसूरत लगा करती हैं। इनके बदन पर से पानी मोतियों की तरह चमकती बूँदों में ढुलकता होता है। और चूँकि पेंगुइन के पर कई रंग के होते हैं, इसलिए उन पर ढुलकने वाले पानी के मोती भी कई रंग के नजर आते हैं और पेंगुइन इतना खूबसूरत दिखाई देती है कि उस पर से नजर हटाने को मन नहीं होता। पानी से बाहर आने पर पेंगुइन स्वस्थ और खुश रहती है और अपने को तरोताजा महसूस करती है।

फिर सब एक-एक छपाछप शोर मचाती किलकारती हुई पानी में कूद ज्ञाती हैं। इनको खतरे की सूचना डैनों को पानी के ऊपर विशेष रूप से छपछपा देने से मिलती है। आदमी चाहे तो उस आवाज की ताली बजा कर नकल कर सकता है। वैज्ञानिकों ने नकल करके पेंगुइन को अक्सर बहुत तंग किया है। समुद्र के किनारे वैज्ञानिक खड़े हुए और मजे से किलोलें करती तैरती पेंगुइन को देख कर छपछपाती ताली बजा डाली। और पेंगुइन के होशहवास गायब। उनमें भगदड़ पड़ जाती है। हड़बोंग मच जाता है और सारी की सारी पेंगुइन हड़बड़ाती, घबराती हुई पानी से बाहर आ जाती हैं। और डर से खड़ी काँपती रहती हैं।

पेंगुइन दुश्मनों के भय के कारण ही किनारों से ज्यादा दूर तैरती हुई नहीं जाया करतीं। क्योंकि खतरा देखते ही इन्हें किनारे की तरफ भाग आना पड़ता है। वैसे ये समुद्र में तैरने की इतनी शौकीन होती हैं कि ये बिना तैरे रह ही नहीं सकतीं। तैरना इनके लिए रोज की जरूरत है। रोज की कसरत की तरह।

पंडित पेंगुइन

कुछ पेंगुइनें को तो जैसे बिना नहाए खाना-पीना ही हजम नहीं होता। यहाँ तक कि वे सुबह बिना नहाए रह नहीं सकतीं। इसलिए जब ऐसी पेंगुइन समुद्र से मीलों दूर किसी देश या द्वीप पर अंडे देने जाती हैं तो बड़ी विकट समस्या पैदा हो जाती है। क्योंकि बिना नहाए इन्हें चैन नहीं पड़ता। इनका जनेऊ खंडित हुआ जाता है। इसलिए ऐसी पेंगुइन आस-पास की किसी नदी, झील या तालाब को तलाश लेती हैं और सुबह तड़के उठ कर उस के ताजे पानी में नहा-धो कर आ जाती हैं। नहाने से इनके शरीर की न केवल गंदगी दूर होती है बल्कि तरह-तरह के रोग फैलाने वाले परजीवियों से भी ये अपने को बचा लेती हैं। सफाई और स्वच्छता का महत्त्व इन्हें आदमी से कम नहीं पता है।

तैरने के उपयुक्त इनके पर

दसियों घंटे लगातार समुद्र में तैरने पर भी इनके पर भीग कर खराब नहीं होते। जैसा कि दूसरी चिड़ियों में देखने को मिलता है। दूसरी चिड़ियाँ जरा भी बरसात में भीग जाएँ तो उनकी दशा बड़ी खराब हो जाती है और वे उड़ने में भी असमर्थ हो जाती हैं। जबकि पेंगुइन घंटों बाद पानी से बाहर निकले तो भी उसके पर वैसे के वैसे ही बने रहते हैं। ऐसा क्यों है ? इसका कारण है, उनके परों के ऊपर एक विशेष प्रकार का मोम-सा लगा रहता है जो उन पर पानी का असर नहीं पड़ने देता। दूसरे इनके पर इतने घने होते हैं कि उनके बीच पानी को घुसने का अवसर नहीं मिलता। जो किसी भी तरह पानी को खाल के नजदीक तक नहीं आने देता। यही कारण है कि बिना किसी खास परेशानी और शारीरिक हानि के पेंगुइन समुद्र में घंटों तैरती रहती है। इनके पैरों की बनावट भी कुछ इस तरह की होती है कि उन पर पानी का प्रभाव कम से कम पड़ता है और पानी इनके ऊपर से तुरन्त ढुलक जाता है।

पानी से बाहर जाने पर पेंगुइन कैसी दिखती है ?

जिस तरह नहा लेने के बाद आदमी ज्यादा स्वस्थ और सुन्दर नजर आता है। उसी प्रकार पेंगुइन जब पानी से बाहर आती हैं, तो ज्यादा खूबसूरत लगा करती हैं। इनके बदन पर से पानी मोतियों की तरह चमकती बूँदों में ढुलकता होता है। और चूँकि पेंगुइन के पर कई रंग के होते हैं, इसलिए उन पर ढुलकने वाले पानी के मोती भी कई रंग के नजर आते हैं और पेंगुइन इतना खूबसूरत दिखाई देती है कि उस पर से नजर हटाने को मन नहीं होता। पानी से बाहर आने पर पेंगुइन स्वस्थ और खुश रहती है और अपने को तरोताजा महसूस करती है।

पानी में कूदते समय बुलबुले

पानी में जब पेंगुइन कूदती है तो ऊपर तमाम हवा के नन्हे-नन्हे बुलबुले फैला देती है। ये बुलबुले दरअसल इनके बदन पर लगे परों के बीच भरी हुई हवा के बनते हैं या पानी के दबाव के कारण ये बुलबुले तुरन्त ऊपर उठ जाते हैं। लेकिन बहुत देर तक तैरना भी पेंगुइन की खाल को नुकसान पहुँचा सकता है।

सबेरा, समुद्र और पेंगुइन

जहाँ, जिन देशों या द्वीपों में रात के समय पेंगुइन जमीन पर अपनी बस्तियाँ बसा कर आराम करती हैं, अगर सुबह तड़के उन देशों और द्वीपों के समुद्रों के किनारे खड़े हो जाएँ तो पेंगुइन की कई एक मनोरंजक आदतों का पता चलता है। और उन आदतों को देख कर लगता है कि पेंगुइन बड़ी समझदार चिड़ियाएँ हैं।

सुबह का झुकझुका भी नहीं हो पाता कि पेंगुइन एक-एक करके अपने नजदीक के समुद्र तट पर आना शुरू कर देती हैं। और काफी समय तक एक-एक कर आती चलती हैं, और उसी जगह एकत्र होती चलती हैं। जब तक कि सूरज खूब चमकदार नहीं हो जाता और समुद्र पर दूर-दूर तक रोशनी नहीं फैल जाती।

समुद्र के किनारे पेंगुइन एकत्र होते समय चुप और खामोश नहीं खड़ी रहतीं। सुबह-सबेरे की ताजी हवा में ये समुद्र के किनारे खड़ी होकर अपनी दूसरी साथी पेंगुइन से चहक-चहक कर बातचीत करती हैं। हवा में अपने बदन के परों को बार-बार फुलाती और दबाती हैं। अपने डैनों को पी.टी. करने के तरीके में बार-बार ऊपर और नीचे करती हैं। फिर जब सूरज़ की लाल किरणें इनके बदनों पर पड़ती हैं, तो ये वहीं जमीन पर खड़ी-खड़ी कसरतें करती हैं। अपने बदन को पूरी तरह बार-बार तानती हैं। अपने अंगों का गौर से निरीक्षण करती हैं। फिर अपने पैरों को संभालती हैं और पूरी तरह

अपने पर दुरुस्त कर, कसरत कर चुकने के बाद ये पानी के नजदीक आ जाती हैं। अब तक वहाँ पेंगुइन के काफी दल एकत्र हो जाते हैं। अलग-अलग जातियों की पेंगुइन अलग-अलग झुण्ड में एकत्र होती हैं। और अपनी-अपनी भाषा में अपनी-अपनी खुशियाँ जाहिर करती हुई चीख-पुकार मचाती रहती हैं। कनफोड़ शोर से पूरा समुद्री किनारा गूँज उठता है।

खानातलाशी समुद्र की पेंगुइन जासूस द्वारा

खूब सबेरा हो जाने के बाद, एक तरह की पेंगुइन 20-30 के दलों में बँट जाती हैं और अपने-अपने दल की जासूस और तेज, सतर्क, चालाक पेंगुइन को अपने दल का नेता स्वीकार कर लेती है। वह जासूस नेता अपने पूरे दल को समुद्र के पानी के बिल्कुल नजदीक ले आता है। यह दृश्य बिल्कुल वैसा ही लगता है, जैसे मछुओं की बस्ती से निकल-निकल कर मछुए मय अपने मछली मारने के सामान-असबाब के साथ समुद्र किनारे पर आकर एकत्र हो गए हों।

जासूस और नेता पेंगुइन सबसे पहले पानी में घुसती है। बहुत ही सतर्कता से, चारों ओर देखती हुई, एकदम चौकन्नी होकर। दो-चार बार पानी में गोते लगाती है। देखती है कहीं कोई दुश्मन तो नहीं छिपा बैठा। पेंगुइनों को पता होता है कि उनके दुश्मन किस मौसम में समुद्र के किस हिस्से में मिलते हैं। इनमें अपने दुश्मन की पहचान बहुत ज्यादा होती है। उनके विषय में समझ ज्यादा होने के कारण अक्सर ये दुश्मनों के हाथ आसानी से नहीं आतीं, फिर भी कभी धोखा तो खा ही जाती हैं। और दुश्मनों द्वारा पकड़ कर कपड़े की तरह फाड़-फाड़ कर चिथड़े-चिथड़े कर दी जाती हैं और खा ली जाती हैं। बाद में इनकी खाल मय परों के समुद्र पर तैरती रह जाती है। अपनी इस दुखद हत्या को बचाने के लिए ही पेंगुइन यह सुरक्षात्मक तरीका अपनाती है

जब नेता और जासूस पेंगुइन चार-पाँच मील के समुद्र की जासूसी

कर चुकती है, और समुद्र में उसे कोई खतरा नहीं दिखाई देता, किसी दुश्मन की आशंका नहीं रहती तो यह अपने दल को डैनों को पानी पर पटक कर कोई ऐसा संकेत करती है कि दल की सारी पेंगुइन पलक मारते ही छपाछप पानी में कूद जाती हैं। मानो वहाँ कोई तैराकी प्रतियोगिता हो रही हो। और संकेत मिलते ही जैसे प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सारे तैराक एक ही क्षण में सब पानी में कूद पड़े हों। बस फिर क्या ? नहाना शुरू। और ऐसे-वैसे नहीं। एक-दूसरे पर खूब पानी उछालते हुए। सीटी बजाते हुए। किलकते, चीखते-चिल्लाते और शोर मचाते इनके दल के दल अपने-अपने जासूस के पीछे-पीछे समुद्र में दसियों मील तक उछल-कूद करने लगता है। पानी में भी ये शुरू में इतना शोर मचाती हैं कि देख-सुन कर हैरत होती है। लेकिन फिर धीरे-धीरे इनका शोर कम हो जाता है। और प्रत्येक पेंगुइन गंभीरता से भोजन की तलाश में जुट जाती है। लेकिन जासूस और नेता पेंगुइन से आगे भोजन की तलाश में भी कोई पेंगुइन नहीं जाती। अगर जाती भी है तो नेता पेंगुइन नाराज होकर उसे डांट देती है या अपनी चोंच से उस पर भयंकर हमला कर देती है। जिससे बेचारी वह आगे जाने वाली पेंगुइन डर कर पीछे लौट आती है।

समुद्र में पेंगुइन की उछल-कूद

पेंगुइन समुद्र में खूब उछल-कूद करती हैं। पानी उलीचती हैं। तरह-तरह से किल्लोल करती हैं। एक गोला बना कर सबकी सब समुद्र में तरह-तरह के खेल खेलती हैं। और कभी-कभी बार-बार समुद्रों के किनारे आकर काफी ऊँचाई से समुद्र के पानी में कूदती हैं। इस तरह देखें तो इनकी नहाने की वही आदत है जो आदमी की है। आदमी भी लगभग इसी तरह नहाया करता है और ऊँचाइयों से कूदने में मजा लेता है।

समुद्र में शिकार का तरीका और भोजन

एक ही शिकार पर कभी भी दो पेंगुइन एक साथ नहीं झपटतीं। और अगर झपट भी जाएँ तो जो उसके ज्यादा नजदीक होती है, दूसरी दूर वाली पेंगुइन उसके लिए वह शिकार अपने मन से छोड़ देती है और किसी दूसरे शिकार के लिए प्रयत्न करने लगती है। ऐसा कभी नहीं होता कि एक ही शिकार के लिए दो पेंगुइन आपस में लड़ जाएं। नेता पेंगुइन को तो इतना भी सहन नहीं होता कि कोई पेंगुइन उसके शिकार की तरफ आँख उठा कर भी देखे। अगर कोई पेंगुइन अनजाने में भी ऐसा कर ले तो उसकी शामत आ जाती है। और नेता पेंगुइन नाराज होकर उस पर हमला कर देती है। और मार कर अपने दल में से भगा देती है। दल से निकली हुई पेंगुइन की जिन्दगी सुरक्षित नहीं होती। वह कभी भी संकट में फँस सकती है। इसलिए घंटे-दो घंटे अलग रहने के बाद वह चुपके से उसी दल में फिर घुस पैठ कर लेती है। और नेता पेंगुइन की नजर पड़ने पर हाथ-पांव जोड़ कर माफी माँग लेती है। और जो स्वाभिमानी पेंगुइन होती हैं वह दल से निकाली जाने पर अपने देश के नेताओं की तरह दल-बदल कर लेती हैं। दूसरे दल की सदस्यता स्वीकार कर, दूसरे दल में रहने लगती हैं।

भोजन दिखाई देते ही पेंगुइन उसे गुपक कर निगल नहीं जातीं। पहले उस शिकार को खूब छकाती हैं। समुद्र में दूर-दूर तक तैरा-तैरा कर उसे हैरान करती हैं। जब बेचारा शिकार थक कर चूर-चूर हो जाता है तब मजे से उसे अपनी चोंच में दाब कर झटक-झटक कर मार डालती हैं, तब कहीं उसे निगलती हैं।

इनका प्रिय भोजन है छोटी-छोटी मछलियाँ। लालीगो, सीपिया जैसे स्क्विड्स झींगे केकड़े, आदि। लालीगो और सीपिया की तलाश में ये बहुत भटकती हैं। क्योंकि उनका मांस नरम और इनके लिए स्वादिष्ट होता है। उन्हें खाना इन्हें सबसे ज्यादा प्रिय है। इसीलिए

ये समुद्र में काफी गहराई तक गोता लगाकर उन्हें खोजा करती हैं। क्योंकि लालीगो और सीपिया गहरे पानी में ही रहने के आदी हैं। बड़ी पेंगुइन तो आसानी तो गहराई तक गोला लगा जाती हैं। लेकिन छोटी पेंगुइनें के लिए गहराई तक गोता लगाना कठिन होता है। उन्हें समुद्र ऊपर उछाल देता है। इसलिए बेचारी छोटी पेंगुइन लालीगो, सीपिया का स्वाद कम ही चख पाती हैं। उन्हें ज्यादातर झींगे और मछलियाँ खाकर ही संतोष करना पड़ता है।

लालीगो और सीपिया के शरीर के भीतर चूने का बना हुआ एक पत्थर-सा होता है। तथा लालीगो और सीपिया का पाइप जैसा मुंह भी बड़ी कड़ी पर्त का बना हुआ होता है। ये दोनों चीजें पेंगुइन के पेट में पच नहीं पातीं। इसलिए इन्हें पेंगुइन खाने के बाद धीरे-धीरे उगल देती है। इसी तरह मछलियों की हड्डियाँ और काँटे भी पेंगुइन पचा नहीं पाती और उन्हें खाने के बाद अक्सर उगल दिया करती हैं।

लंबे उपवास से उठने पर पेंगुइन को तेज भूख लगी होती है। और उस भूख में जो भी भोजन इन्हें अपने सामने दिखाई पड़ता है, उसे पकड़ कर तुरन्त निगल जाती है। तब ये अपने स्वाद की परवाह नहीं करती।

समुद्र में पेंगुइन के दुश्मन

समुद्र में कई जीव-जन्तु ऐसे हैं, जिनसे पेंगुइन की जन्मजात और पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही है। असल में उन दुश्मनों का प्रिय भोजन पेंगुइन हैं। इसलिए वे इनकी तलाश में समुद्र में घूमा करते हैं। इनमें सबसे प्रमुख है, समुद्री सील। सील स्तनधारी जीव है। और यह ऊदबिलाव की शक्ल का होता है लेकिन आकार में उससे कई गुना बड़ा और दांतों में बहुत खूंखार। यह पेंगुइन को बड़ी बेरहमी से पकड़ कर मारा करता है और अपने नुकीले दाँतों से इन्हें फोड़-फाड़ कर चिथड़े-चिथड़े कर डालता है। सील मांसाहारी जीव है। और वह

सील मछली द्वारा पेंगुइन का शिकार

पेंगुइन को मार कर खाने का बड़ा शौकीन है। बस उसे पेंगुइन दिखाई भर दे जाए कि फिर उसके झपट्टे से उसका बच पाना एकदम कठिन होता है। पानी में पेंगुइन और ऊदबिलाव की तरह ही सील भी लहराता हुआ चला करता है। दूर से दिखाई देता है कि समुद्र में कोई काली-सी चीज बार-बार डूब और उछल रही है। काफी दूर से ही वह काली-सी डूबती-उछलती चीज पर पेंगुइन के जासूस और नेता की नजर पड़ जाती है। और वह अपने डैने विशेष प्रकार से पानी पर छपछपा देती है। बस फिर क्या। एकदम नहाती और शिकार पकड़ती पेंगुइन में खलबली मच जाती है। वैसी ही खलबली जैसी भेड़ों के झुंड में भेड़िया के आने पर पड़ जाती है। हड़कंप मच जाता है। फिर जिसे जहाँ से जगह मिलती है, वहीं से किनारे की तरफ भाग लेती हैं। और पलक मारते ही सारी पेंगुइन पानी से बाहर आ जाती हैं। और गौर से उस काली चीज को उछलते-डूबते घूरती रहती हैं। भय के कारण काँपती रहती हैं। जब कोई पेंगुइन सील दबोच ली जाती है तो सारी पेंगुइन मिल कर बड़ा शोर मचाती हैं। लेकिन शोर मचाने के सिवाय वे और कुछ नहीं कर पातीं। न आगे बढ़ कर उसे बचाने की उनमें हिम्मत होती है। दूसरे दुश्मनों से बचाने के लिए तो पेंगुइन उस शिकारी के आस-पास जमा होकर शोर मचाने लगती हैं। उसे चोंचों से घायल करने की कोशिश कर पेंगुइन को उसकी पकड़ से छुड़वाने का भी प्रयत्न करती रहती हैं। लेकिन सील के पास कोई नहीं फटकती। जानती हैं कि सील जिन्हें खाता है, उन्हें तो मारता ही है। दूसरी सैकड़ों पेंगुइन को घायल कर डालता है या मार भी डालता है। भंभोड़-भंभोड़ कर बहुत-सी पेंगुइनें को एक ही झपट्टे में फेंक देता है। इसलिए उसका सामना कोई पेंगुइन नहीं करती। बस असहाय-सी किनारे खड़ी चिल्लाती रहती हैं। सील भी कम चालाक शिकारी नहीं है। वह इन पर छिपकर हमला करता है। चट्टानों की ओट में समुद्र में छिपा बैठा रहता है। और जैसे ही बड़ी-बड़ी पेंगुइन लालीगो या सीपिया का पीछा करती हुई वहाँ

तक आती हैं कि वह दबोच लेता है। इसीलिए पेंगुइन गोता लगाने के बाबजूद चट्टानों के नजदीक नहीं जाया करती। वे जानती हैं कि वहाँ उन पर छिप कर हमला किया जा सकता है। एक पेंगुइन अगर पकड़ ली जाए तो सील से बचाने-छुड़ाने का कोई प्रयत्न नहीं करती। बल्कि सब अपनी-अपनी जान बचा कर भाग खड़ी होती हैं। और कुछ ही मिनटों में दबोची हुई पेंगुइन का खून ही खून लहरों पर तैरता हुआ फैलने लगता है। दबोची हुई पेंगुइन बुरी तरह घबरा कर चीखती-चिल्लाती है। और जब तक उसके शरीर में दम रहता है, वह सील से छूटने का प्रयत्न करती रहती है। लेकिन सील भला उसे छोड़ सकता है। देखते ही देखते पेंगुइन की परों लगी खाल लहरों पर तैरने लगती है और सील उसे पर पछाड़-पछाड़ कर साफ कर-कर के खाने लगता है। उस पर पेंगुइन के शोर का जरा भी प्रभाव नहीं पड़ता। उसके कान होते हैं, लेकिन जूं नहीं होती जो उसके कान पर रेंगे।

सील के अलावा समुद्र में उसके खास दुश्मन हैं ह्वेल। ह्वेल मछली कैसी होती हैं? बड़ी विशाल शरीर की और मजबूत जबड़ों वाली। ये भी सील की ही तरह स्तनधारी जीव हैं। ये भी पेंगुइन को अपने जबड़ों में दबोच कर पीस डालता है और पलक मारते ही पेंगुइन चिथड़े-चिथड़े हो जाती है।

तीसरे दुश्मन पेंगुइन के समुद्र में हैं विशालकाय शार्क मछलियां। जिनमें आरा मछली के पास तो हत्या करने का आरा जैसा एक औजार भी होता है। उससे वह पेंगुइन की चट हत्या कर देता है। फिर मरी हुई पेंगुइन को निगल जाता है। इन सबसे बच कर रहना पेंगुइन के लिए आसान नहीं होता। लेकिन बचने का प्रयत्न तो करती ही हैं। इसीलिए समुद्र में रहते वक्त काफी सतर्क रहती हैं। खास कर उन मौसमों में, जब इनके दुश्मन समुद्र में ज्यादा तादाद में रहते हैं। साल के कुछ ऐसे मौसम भी होते हैं, जब समुद्र के ये दुश्मन कहीं और चले जाते हैं। किसी गरम समुद्र में अथवा बच्चे देने जमीन

पर। ऐसे मौसमों में पेंगुइन की बेधड़क उछल-कूद समुद्र में देखते बनती है। तब आदमी किनारे खड़ा होकर छपछपाती हुई ताली से खतरे का संकेत भी करे तो पेंगुइन उस संकेत को सुनती तक नहीं। न गौर करती हैं, उसी तरह उछल-कूद मचाए रहती हैं। शोर करती करती हैं। और अपने शिकार की तलाश करती रहती हैं।

पेंगुइन के दुश्मन समुद्र

एक कहावत है, आग और पानी से कोई प्रीत नहीं करनी चाहिए। पेंगुइन पानी में रहती है। बहुत अच्छी तैराक है। लेकिन फिर भी पानी में डूब कर मर जाती है। एक और कहावत है, अच्छे तैराक हमेशा पानी में डूब कर ही मरा करते हैं। वही हस्र पेंगुइन का होता है। कभी-कभी ये लालीगो और सीपिया की तालाश में ज्यादा गहरे गोते लगा जाती हैं। तब इनका दम घुट जाता है। और साँस लेने जब तक ये ऊपर आती हैं, जब तक मर चुकी होती हैं। फिर मरी हुई पेंगुइन पानी पर उतराती रहती है। समुद्रों में तूफान भी बहुत आते हैं। तूफानी समुद्र बहुत खूंखार होता है। उत्ताल और भयानक लहरें पेंगुइन को एक ही झटको में चिथड़े-चिथड़े कर डालती हैं। सैकड़ों हजारों पेंगुइन की खालें तूफान के बाद समुद्रों में तैरती हुई मिलती हैं। जो इस बात की प्रमाण हैं कि समुद्र भी इनका दुश्मन है। कभी-कभी समुद्रों में तैरती बर्फ की बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच पेंगुइन पिस जाती हैं। मर भी जाती हैं। और अंग-भंग होकर घायल भी हो जाती हैं। इन दुश्मनों की क्रूरता से घायल पेंगुइन की संख्या प्रत्येक दल में हजारों में होती है। इसी से पता चलता कि पेंगुइन को जीने में कितने झंझटों का सामना करना पड़ता है।

धरती पर पेंगुइन के दुश्मन

समुद्र से ज्यादा सुरक्षित पेंगुइन जमीन पर हों, ऐसा नहीं है। हाँ, समुद्री खतरे जमीन पर कम-से-कम हैं। समुद्र से हट कर ये मीलों

भीतर जमीन पर आकर रहती हैं। तब इनका सबसे बड़ा दुश्मन तो आदमी होता है। इनसे तेल निकालने के कारखाने आदमी चलाता है। इस कारण इन भोले-भाले पक्षियों को पकड़-पकड़ कर कारखानों में भेजा जाता है जहाँ इन्हें बड़े-बड़े कोल्हुओं में पेला जाता है और इनकी चर्बी में जमा तेल को निकाला जाता है। दूसरे पेंगुइन के अंडे आदमी खाता है। जब पेंगुइन के अंडों से आदमी चूजे ही नहीं निकलने देगा तो इनकी संख्या कम होगी ही। वैसे भी आदमी इन्हें भून-भून कर खाता है और इनके खूबसूरत परों से तरह-तरह की सजावट की चीजें बनाता है।

आदमी इनका भला समुद्र में भी नहीं सोचता। समुद्रों में जो आए दिन पानी के जहाज आते-जाते हैं, वे रोज समुद्रों में मनों-टनों तेल और दूसरे विषैले पदार्थ छोड़ते-फैलाते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि समुद्रों का पानी आए दिन तेलीय होता चला जा रहा है। जिसमें पेंगुइन के परों पर तैरते समय तेल की पर्त-सी जम जाती है। यह तेल इनके परों को नष्ट कर देता है और उनमें समुद्र के पानी से पेंगुइन के शरीर को बचाने की क्षमता नहीं रह जाती। जिससे हजारों पेंगुइन मौत के घाट उतर जाती हैं।

आदमी के अलावा इनके दुश्मन धरती पर हैं कुत्ते, बिल्लियां, भेड़िए व दूसरे मांसाहारी जीव-जन्तु। समुद्री पक्षी स्कवा भी इनका कम दुश्मन नहीं है। यह इनका पीछा जमीन पर भी करता है। और जहाँ ये अंडे देते हैं, वहाँ आकर इनके अंडे इनसे छीन कर खा जाता है या फोड़ कर नष्ट कर जाता है। हालांकि यह देखने में कुल कबूतर जितना बड़ा पक्षी होता है।

पेंगुइन के दुश्मन मौसम

मौसम भी पेंगुइन से कम दुश्मनी नहीं निभाते। ओलों की बरसात में पेंगुइन बुरी तरह जख्मी हो जाती हैं और मारी जाती हैं। भयंकर जाड़ों की रातों में बर्फ के साथ अगर पानी भी बरसने लगता है तो

बेचारी पेंगुइन सर्दी खा जाती हैं और मर जाती हैं। बर्फीले तूफान और बर्फीली आंधियाँ बहुत तेज चलती हैं। इनमें कभी-कभी पेंगुइन उड़ी चली जाती हैं और मर जाती हैं। कुछ द्वीपों पर तो समुद्री तूफान का इतनी तेजी से बाढ़युक्त पानी आता है कि पेंगुइन अपने को संभाल भी नहीं पातीं और उनकी बेदर्द लहरों की चपेट में आकर किन्हीं चट्टानों से टकरा कर मर जाती हैं। कभी-कभी सूरज की गरमी इनके लिए इतनी असह्य हो जाती है कि ये गरमी से मर जाती हैं। यह देखा गया है कि जितनी पेंगुइन सर्दी के कारण नहीं मरतीं, उससे कहीं ज्यादा पेंगुइन गरमी से परेशान होकर मर जाती हैं। उपवास में कभी-कभी ये इतनी कमजोर हो जाती हैं कि मौसम से लड़ने की ताकत इनमें नहीं रह जाती। नतीजा यह होता है कि मौसम का जरा-सा भी बदलाव इनकी जान ले लेता है। यह तो हम सभी जानते हैं कि कमजोर के हजार दुश्मन होते हैं और कमजोर को कोई भी दबा-सता सकता है।

पेंगुइन की बर्फ पर स्केटिंग और बर्फ पर मनोरंजक खेल

इतने सारे दुश्मनों और दिक्कतों के बावजूद पेंगुइन को किसी चीज की ज्यादा परवाह नहीं होती। जो पेंगुइन मर गई, वह मर गई। जो जिन्दा हैं, वे मरी हुई पेंगुइन को बहुत जल्दी भूल जाती हैं और अपने खेलों और मनोरंजनों में मगन हो जाती हैं। नहीं तो क्या, मरने वाली के पीछे कब तक बेचारी आँसू बहाएँ। जो मर गई, वह आँसू बहाने से वापस तो आ नहीं जातीं। तब क्यों अपनी आँखें रो-रोकर फोड़े। इसीलिए पेंगुइन अपने मृत साथी को बहुत जल्दी भूल जाती हैं और अपने मनोरंजन में लगी रहती हैं। इनका प्रिय खेल है बर्फ पर मनोरंजन करना। जिस तरह बर्फ पर स्केटिंग आदमी करता है, उसी तरह पेंगुइन भी अपने उदर के बल बर्फ पर बैठ जाती हैं और अपनी टाँगें पीछे कर लेती हैं। बस बर्फ पर फिसलना शुरू कर देती हैं और इस तरह ये बर्फ पर मीलों दूर तक स्केटिंग करती
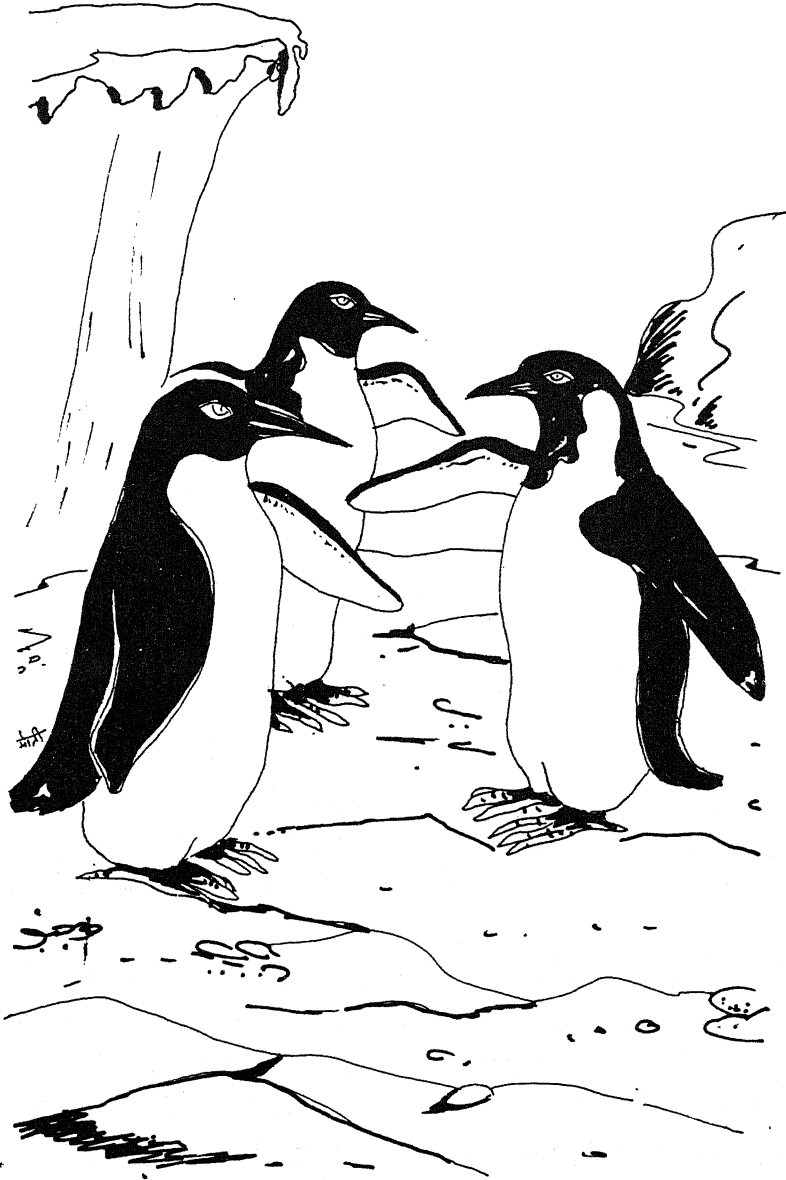
बर्फ पर खेलते पेंगुइन के बच्चे

घूमती हैं। कभी-कभी तो इनके दल के दल स्केटिंग करते हैं। वैसे ही जैसे समुद्रों में इनके दल के दल एक साथ तैरते हैं। ये दलों में इसलिए रहते हैं कि दल इनकी सुरक्षा को ज्यादा स्थायी रखता है। हालांकि कोई किसी की मदद कुछ खास नहीं कर पाता। फिर भी दुश्मन को हमला करते वक्त यह भय रहता है कि कहीं पूरा दल उन पर न टूट पड़े।

पेंगुइन अपने कपड़े बदलती हैं

जी हाँ! जब हम हमेशा एक ही कपड़े पहने नहीं रह सकते तो सफाई पसन्द पेंगुइन क्यों जिन्दगी भर कपड़े पहने बने रहें ? लेकिन पेंगुइन कैसे कपड़े पहनती हैं ? टेरीलीन के या टेरीकाट के ? जी नहीं । पेंगुइन इनमें से कुछ नहीं पहनती। इसके वस्त्र होते हैं, इसके शरीर पर उगे हुए पर। परों से ढका शरीर वस्तुतः इनका कपड़ों से ढका शरीर है। और ये कपड़े पुराने होकर घिस जाते हैं। फट-टूट जाते हैं। मैले पड़ जाते हैं। उनमें गंदगी व परजीवी अपने निश्चित निवास बना लेते हैं। ऐसी दशा में इनका जीवन सुरक्षित नहीं रह जाता। तब इन्हें इन कपड़ों को बदलने की जरूरत पड़ जाती है। साल में ये एक बार जरूर अपने वस्त्र बदलती हैं। शरीर के सारे पर साल में एक बार जरूर पूरी तरह त्याग दिए जाते हैं। और उन दिनों ये बिल्कुल नंगी होकर बैठ जाती हैं और नए पर उग आने का इंतजार करती रहती हैं। नए पर भी बहुत जल्दी उग आते हैं, जो बहुत चमकदार, साफ, सुन्दर और बढ़िया होते हैं । बेहद चिकने और नरम। जब ये पूरी तरह बढ़ कर इनके शरीर को अच्छी तरह बढ़कर ढक लेते हैं, तब ये फिर समुद्र में जाने के लिए तैयार हो जाती हैं। पुराने परों को त्यागना इसलिए भी जरूरी होता है कि साल भर तैरते रहने से उन परों की समुद्र के पानी से लड़ने की क्षमता जाती रहती है। और उन परों पर पानी का असर पड़ने लगता है। जिससे पेंगुइन का जीवन खतरे में पड़ जाता है। यही कारण है कि

इन्हें हर साल तैरने की अपनी पोशाक नयी उगानी पड़ती है। पुरानी से ही काम नहीं लेती। जिन दिनों ये किनारे पर बैठ कर अपने पर त्यागती हैं, उन दिनों उन किनारों पर परों के पहाड़ से उग जाते हैं। वैसे ही जैसे कपड़ों की मिलों में रुई के पहाड़ बने रहते हैं। हवा में ये परों के पहाड़ दूर-दूर तक उड़ते हुए दिखाई देते हैं। परों के बिना पेंगुइन देखने में अच्छी नहीं लगती। बहुत खराब लगती है। लेकिन जब उसके शरीर पर नए पर उग आते हैं, तो वही पेंगुइन इतनी प्यारी लगती हैं कि उन्हें सफेद खरगोशों की तरह गोद में उठा लेने को जी मचल जाता है। भोली-भाली आंखें। नए-नए रंग-बिरंगे पर।

पेंगुइन की अंडे देने की तैयारी

पेंगुइन का अंडे देने का मौसम भी निश्चित होता है। यह अक्सर वह मौसम होता है, जब समुद्रों में भोजन इन्हें ज्यादा नहीं मिला करता। भोजन की जब कमी हो जाती है। तब ये अपना पेट पूरी तरह भर कर समुद्रों से दूर मैदानों में चली जाती हैं। हर पेंगुइन अक्सर अंडे देने वहीं जाती हैं, जहाँ हमेशा जाती रही हैं। यह अपने अंडे देने के स्थान में सहज ही कोई परिवर्तन नहीं करती। जिस जगह वह पहले घोंसला बना चुकी है, उसी जगह दूसरे साल भी वह घोंसला बनाती है। अगर उसका वह स्थान कोई और पेंगुइन हथिया लेती है तो उससे इनमें लड़ाई हो जाती है और यह लड़ाई कभी-कभी खून-खच्चर तक पहुँच जाती है। दूर-दूर तक खून के छींटे फैल जाते हैं। इस लड़ाई का कभी-कभी वही परिणाम निकलता है जो आदमियों में ऐसी लड़ाइयों का परिणाम निकलता है। एक-दो की जान चली जाती है या अंग-भंग हो जाते हैं। किसी का पैर टूट जाता है, किसी का डैना टूट जाता है तो किसी के तमाम पर नुच जाते हैं। कुछ इतनी घायल हो जाती हैं कि महीनों उनके घावों से खून बहता रहता है और उन्हें कोई-न-कोई ऐसा रोग घेर लेता है कि बेचारी मर जाती

हैं। लेकिन इसके बावजूद जो आदमी का स्वभाव है, वही इनका भी है। दूसरों के घोंसलों पर कब्जा करना इनकी आदत बनी रहती है। जब भी मौका मिलता है, दूसरे के घोंसले की थोड़ी-बहुत जमीन अपने घोंसले में दबा लेती हैं और लड़ाई चलती रहती है। हालांकि पेंगुइन एक ही मैदान में बैठ कर लाखों की संख्या में अंडे देती हैं। इसलिए इनके घोंसले बिल्कुल पास ही पास बनते हैं। यहाँ तक कि एक पेंगुइन का शरीर दूसरी पेंगुइन से सटा हुआ रहता है। बस यही इनका लड़ने का भी कारण होता है। किसी को जरा भी किसी के कंधे का धक्का लग गया, बस लड़ना शुरू। पहले तो आपस में गाली-गलौच होती है, फिर नोचा-नोची होने लगती है। फिर चोंचों से हमले होने लगते हैं और बस महाभारत शुरू। इस तरह हजारों जगह पूरे दल में इनका महाभारत चलता ही रहता है। यह महाभारत इतना भयंकर शोरमय होता है कि कान फूट जाएँ।

जोड़े की तलाश

सबसे पहले अंडे देने के अपने निश्चित स्थान पर मादा पेंगुइन आती है और दो-चार दिन तक अपने साथी नर की प्रतीक्षा करती है। नर अक्सर एक-दो दिन में अपनी मादा को तलाशता हुआ, आवाज देता हुआ वहाँ आ पहुँचता है। लेकिन अगर किसी और वजह से नर को आने में देर हो जाए तो मादा उसका ज्यादा दिनों तक इंतजार नहीं करती। वह किसी दूसरे नर के साथ रंगरेलियां मनाने लग जाती है। उसे अपने अंडे देने और बच्चे पैदा करने से मतलब रहता है। नर वही रहे या कोई दूसरा। उन्हें इससे ज्यादा मतलब नहीं होता। इस तरह देखा जाए तो मादा पेंगुइन ज्यादा स्वार्थी होती हैं। जबकि नर अक्सर अपनी पुरानी मादा के साथ ही खुश रहता है।

जब पुराने नर और पुराने मादा एक-दूसरे को खोजते हुए आ लेते हैं तो बहुत खुश होते हैं। उस वक्त वे इतने खुश हो-हो कर

नाचते-चिल्लाते हैं कि जिसकी कोई सीमा नहीं होती। नर मादा को चूमता है और मादा अपने नर को पाकर खूब लाड़-प्यार का प्रदर्शन करती है। दोनों खूब जोर-जोर से चिल्लाते और सीटियां बजाते हैं। फिर दोनों साथ-साथ रह कर अपना घोंसला बनाने में जुट जाते हैं। कंकड़ लुढ़का-लुढ़का कर लाते हैं। घास और टहनियां उठा-उठा कर लाते हैं और बड़े प्यार से अपना घर बसाने की तैयारी करते हैं।

जोड़ा बाँधने में कठिनाई

कभी-कभी मादा कुछ दिनों तक इंतजार करती रहती है और उसका नर नहीं आ पाता या नर आ जाता है और उसकी मादा कहीं रह जाती है, नहीं आ पाती तो कुछ समय तक तो ये उदास और मुँह लटकाए बैठे रह जाते हैं। और जब मादा का नर घायल अवस्था में लंगड़ाता-लंगड़ाता अपनी मादा के पास आता है तो मादा रूठ कर उससे मुँह फेर लेती है। यही अवस्था घायल मादा को देख कर नर की रहती है। नर भी घायल मादा से मुंह फेर लेता है और उसके सामने ही किसी दूसरी मादा के साथ रंगरेलियां मनाने लग जाता है या मादा अपने घायल नर के सामने ही किसी दूसरे नर के साथ घर बसा लेती है और वह टापता ही रह जाता है। उस समय इन घायलों की पीर घायल ही जान सकता है। बेचारों के केलेजे पर क्या गुजरती है, उसका दूसरे लोग आसानी से अंदाज नहीं लगा सकते। घायल पेंगुइन अपने साथी की इस अवहेलना को कभी-कभी सह नहीं पाता और कहीं जा कर आत्महत्या कर लेता है। यानी किसी एकान्त में जाकर मौत का इंतजार करता रहता है और अगर उसे उम्मीद होती है कि वह ज्यादा घायल नहीं है और जल्दी ही ठीक हो जाएगा, तो वह अपने ही जैसे किसी-न-किसी घायल साथी को ही अपने साथ के लिए चुन लेता है। और उसी के साथ खुशी-खुशी रहने का प्रयत्न करने लगता है। अक्सर यह देखा गया है कि घायलों के साथी भी घायल ही होते हैं। क्योंकि घायलों का दर्द भी घायल

ही समझते हैं। जिसके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई। जो घायल नहीं होते, वे क्या जानें घायलों का दर्द।

यह भी अक्सर देखा गया है कि जिन घायलों को कोई साथी नहीं मिलता, वे अपने समाज में बिल्कुल अकेले रह जाते हैं। उस लाखों की बस्ती में उनका अपना कोई साथी नहीं होता। बेचारा अकेला, कुछ दिनों तक उदास-उदास अपने जैसे ही किसी घायल को खोजता रहता है, जब नहीं मिलता तो अंत में निराश होकर एक जगह बैठ जाता है और मन-ही-मन रोता रहता है। अपमान को जब नहीं सह पाता, तो दूसरी पेंगुइन के अंडे या बच्चे चुरा लाता है। और जब इस अपराध पर कोई पेंगुइन उसे चोंचों से मारती हैं, तो चुपचाप मार सहता रहता है। लेकिन आसानी से उसका अंडा या बच्चा वापस नहीं करती। अपनी उदर की खाल में दुबका कर ऐसे बैठ जाता है कि बाहर से दिखाई तक नहीं देता कि उसने किसी पेंगुइन का चूजा या अंडा चुरा कर अपने पास छिपा रखा है। नतीजा यह होता है कि दूसरे नर और मादा, जिसके वह अंडे या बच्चे चुराता है, वे उसे मार डालते हैं और अपने चुराए हुए अंडे या बच्चे को वापस ले आते हैं।

अंडों और बच्चों की चोरी या अपहरण इनके दल में एक आम बात है। जिसका जब मौका लगता है, वह दूसरों के अंडे या बच्चे चुरा कर भाग खड़ा होता है। नतीजा यह होता है कि इनमें सदैव एक-दूसरे के प्रति अविश्वास और भय बना रहता है। और हमेशा एक-दूसरे को शक की नजरों से देखती रहती हैं। सब एक-दूसरे से हर समय गाली-गालौज करती रहती हैं। लड़ती रहती हैं।

इस सबके बावजूद अगर इनके दल में इनका कोई दुश्मन बाहर से आकर हमला करे तो ये एक होकर मुकाबला करती हैं और अक्सर उसे मार भगाती हैं।

अंडों या बच्चों की चोरी कुछ पेंगुइन तो महज अपने पड़ोसी पेंगुइन को तंग करने के लिए किया करती हैं। जब पड़ोसी को खूब तंग कर लेती हैं, तो उनके अंडे या बच्चे वापस कर देती हैं। ऐसे

अद्भुत तमाशे और कोई जीव नहीं किया करता, जैसे ये पेंगुइन किया करती हैं।

अंडे देने के स्थान

अंडे देने के इनके स्थान निश्चित होते हैं। कुछ तो दक्षिणी ध्रुव पर ही अंडे देती हैं। कुछ दूसरे देशों और दूसरे द्वीपों पर। जहाँ जिसका स्थान नियत होता है, वह वहीं अंडे देने जाती है। हर जाति की अपनी निश्चित जगह होती है, जहाँ वह अंडे देना पसंद करती है और जब तक जिन्दा रहती है, वहां अंडे देती रहती है। तीन साल में ये अक्सर एक ही बार अंडे दिया करती हैं। दक्षिणी ध्रुव पर ये बर्फीले मैदानों में ही बिना किसी घोंसले के अंडे देती रहती हैं। लेकिन जहाँ बर्फ नहीं हुआ करती, वहाँ ये टसाक नामक घास में छिपकर घोंसले बनाती है। यहाँ तक कि एक पेंगुइन अपनी दूसरी पड़ोसिन पेंगुइन तक को नहीं दिखाई पड़ती। उनमें आपसी औपचारिक बाचतीच सिर्फ तब होती है, जब वे समुद्र की तरफ जा रही होती हैं या समुद्रों से लौट रही होती हैं। कंकड़ों-पत्थर में भी ये अपने घोंसले बनाती हैं। जो अक्सर तीन फुट तक ऊँचे होते हैं।

पेंगुइन का अपने पड़ोसियों से व्यवहार

पेंगुइनें अपने पड़ोसी के साथ वैसा ही व्यवहार करती हैं, जैसा कि हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान हमारे साथ किया करता है। हमेशा तो जासूसी करती रहती हैं और हमेशा दूसरे को नुकसान पहुँचाने की ताक लगाए रहती हैं। हमेशा दूसरे के घोंसले पर नजर रखती हैं। जरा भी आँख बची कि दो-चार कंकड़ गायब या दो-चार लकड़ियाँ खिसक गईं या अंडे चुरा लिए या बच्चों का अपहरण हो गया या नर को किसी दूसरी मादा ने रिझा लिया या मादा किसी और नर के साथ बहक गई। यह हमेशा पड़ोसियों के साथ पेंगुइन के दल में होता रहता है। इसलिए पास-पास बैठ रह कर भी दो पेंगुइन कभी सच्ची पड़ोसिनें नहीं होतीं। सच्ची दोस्त नहीं होतीं। कभी भी कोई

भी धोखा देकर चला जाता है। लंगड़ी-लूली पेंगुइन को अक्सर तनहाई में जीना पड़ता है। और अकेली ही मर जाती हैं। उन पर कोई दो आँसू भी बहाने वाला नहीं होता। अकेला पेंगुइन बिना अपने साथी के कभी भी दुश्मन का शिकार हो जाता है। और उसे कोई बचाता तक नहीं। इसलिए जब एक सही-सलामत साथी, अपने दूसरे सही-सलामत साथी को ठीक-ठीक और समय पर पा लेता है तो दोनों बहुत मगन होते हैं। खूब नाचते और खुशी से चिल्लाते हैं। लेकिन मादा नर की अपेक्षा ज्यादा बेवफा होती है। वह ज्यादा दिनों तक अपने साथी का इंतजार न करके अपने किसी दूसरे नर के साथ बहक जाती है और उसके साथ घर बसा लेती है। जब उसका लेटलतीफ साथी सही-सलामत वापस आता है तो बिना किसी लड़ाई के वह अपने पुराने साथी के साथ रहने के लिए चली जाती है। और वह नर, यह जानते हुए भी यह मादा बेवफा है, वह जरा लेट हो गया था, तो बजाय उसका इंतजार करने के दूसरे नर के साथ रंगरेलियां मनाने लगी थी, वह नर अपनी मादा की इस गलती को तुरंत क्षमा कर देता है। और मजे से बिना किसी तनाव के उसके साथ रहने लगता है। घोंसला बनाता है, उसके अंडे सेता है। बच्चों का पालन-पोषण पूरे मन से करता है।

पेंगुइन के चूजे

जैसे सफेद ऊन के नरम-नरम गोले रखे होते हैं, वैसे ही होते हैं इनके भोले-भाले नरम-नरम चूजे। अंडे सेने में पेंगुइन को बहुत समय लगता है। दो-तीन सप्ताहों से लेकर नौ-दस सप्ताह तक इन्हें अंडे सेने पड़ते हैं। अंडे पंजों के ऊपर रख कर उदर से दबाए रखे जाते हैं। जिससे इनकी शरीर की गर्मी से वे सेये जा सकें। मादा अंडे देकर खाना खाने समुद्र पर भाग जाती हैं। जबकि नर भूखा-प्यासा नौ-दस सप्ताह तक अंडे सेता रहता है। जब अंडों से चूजों की आवाज सुनाई देने लगती है, तभी मादा लौट आती है और नर खाना खाने समुद्र पर चला जाता है। मादा अंडा फोड़ कर चूजा

अपने अंडों को सेती हुई पेंगुइन

बाहर निकालती है और उसे खाना खिलाती है।

चूजों का भोजन

चूजों को मादा क्या खिलाती है ? देखा गया है कि मादा अपना खाया हुआ उगल-उगल कर बच्चों की चोंचों में डालती रहती है और बच्चे उसे बड़े प्यार से निगलते रहते हैं। अक्सर मादा द्वारा यह उगला गया भोजन दूध जैसा पतला, अधपचा और अति पौष्टिक होता है जो उसके पेट के एक विशेष भाग से आया करता है। बच्चे बड़े बेसब्र और पेटू होते हैं। उसी तरह जैसे आदमी के बच्चे हर समय खाने के लिए रोते-झीकते रहते हैं, ये चूजे भी हर समय अपनी माँ से भोजन माँगते रहते हैं और चोंचें फाड़े हुए उनकी ओर भीख-सी माँगते हुए चिल्लाते रहते हैं। यहाँ तक कि इन चूजों के पास से भी कोई पेंगुइन गुजरे तो ये उससे भी खाने को मांगते हैं। लेकिन दूसरी पेंगुइन कभी इन्हें खाना नहीं देती। भले ही चिल्लाते रहें। पेंगुइन को अपने बच्चों की पहचान होती है।

चूजों को ट्रेनिंग

नर और मादा मिल कर अपने बच्चों को जीवन की जरूरी बातों का ज्ञान कराते हैं। समुद्र दिखाते हैं। उसमें तैरना सिखाते हैं। शिकार करना बताते हैं। दुश्मनों से परिचय कराते हैं। सांकेतिक भाषा का ज्ञान कराते हैं। यहाँ तक कि अंडे कैसे दिए जाते हैं? कहाँ दिए जाते हैं और उनके लिए तैयारी कैसे की जाती है तथा घोंसले कैसे बनाए जाते हैं? ये सारी बातें नर और मादा दोनों मिल कर अपने चूजों को सिखाती और बताती हैं, समझाती हैं। जिससे वे आसानी से जीवन जी सकें। जब उनके बच्चे काफी समझदार हो जाते हैं तो माँ-बाप से अलग रहने लगते हैं। लेकिन अक्सर रहते अपने माँ-बाप के ही दल में हैं। बहुत सारी बातें तो ये बच्चे अपनों से बड़ों को करते देख-देख कर सीख जाते हैं। इनमें नकल करने का बड़ा भारी गुण

होता है। अंडे देने की उम्र नहीं होती, फिर भी अपने माँ-बाप की देखा-देखी घोंसले बनाते हैं। मादा चूजे को बहकाते और फुसलाते हैं। और अपने माँ-बाप की या अड़ोसी-पड़ोसियों की पूरी तरह नकल करते हैं।

इस सबके बावजूद जब इनकी अंडे देने की उम्र आती है तो ये अनाड़ी साबित होते हैं। न इन्हें अच्छा घोंसला बनाना आता है, न इन्हें अंडों को ठीक से सेने का अनुभव होता है, न ये अपने बच्चों की परवाह भी ठीक से कर पाते हैं। नतीजा यह होता है कि इनके पहले प्रसव के सारे अंडे और बच्चे खराब हो जाते हैं या मर जाते हैं। इन्हें इसका गम भी नहीं होता। बड़े लापरवाह और मस्त किस्म की उम्र होती है इनकी। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, ये जीवन में गम्भीर होते जाते हैं।

किसी वजह से अगर किसी दूसरे पेंगुइन के बच्चे मर जाते हैं तो वह किसी से गोद ले लेती है और उस गोद लिए चूजे को बड़ी ममता के साथ पालती-पोसती है। ठंड से बचाने के लिए मादा या नर अपने चूजों को अक्सर अपने उदर के नीचे इस तरह दुबका लेते हैं कि बाहर से दिखाई तक नहीं देते। यही तब होता है, जब कोई पेंगुइन किसी का चूजा चुरा लेती है। उसे इसी तरह छिपा लिया जाता है।

बहरहाल चूजों को जितना सीखने से जीवन जीना नहीं आता, उससे कहीं ज्यादा इन्हें जीवन का अनुभव सिखाता है। और करीब दो साल में ये नवजात चूजे पूरे जवान और जीवन के कठोर संघर्ष को सह सकने में समर्थ हो जाते हैं।

मनुष्य और पेंगुइन की आदतें

अगर हम गौर से देखें तो पेंगुइन में हमें ऐसी बहुत-सी आदतें दिखाई देती हैं, जो आदमी से बहुत मिलती-जुलती हैं। जैसे इनका खड़े-खड़े चलना। इनका बर्फ पर स्केटिंग का खेल खेलना। अपने

बच्चों का लालन-पालन करना। चूजों को ममता से पालना। उन्हें खिला-पिला कर संसार में जीने योग्य बनाना। नर मादा का साथ-साथ जीना। बस्ती बना कर रहना। दलों में रहना। आपस में, पास-पास रहते हुए भी लड़ते रहना। एक-दूसरे की चोरी करना। घर की सीमा को लेकर बुरी तरह मार-पीट कर बैठना। झगड़ना। एक-दूसरे को घायल कर डालना। यहाँ तक कि मार भी डालना। दुश्मनों से भय। आदि ये सब ऐसी बातें हैं, जिनमें पेंगुइन हमारे बहुत नजदीक हैं। लेकिन पेंगुइन में हमारी जितनी समझ और बुद्धि नहीं है। यही कारण है कि हम, हम हैं और पेंगुइन महज एक चिड़िया।

■■